# * अनुक्रमणिका *





Scanned by CamScanner

लागी सरस समाधि हृदय उमगेउ रस सागर।
पुलकांकित तनभये निरखि हिय बिच नव नागर ॥ ८ ॥

दो०—जय रघुनन्दन मन रमन, रसिकन प्राणाधार।
"सीताशरण" सनेह निधि, नटवर राज कुमार ॥१॥

इति श्री मति बृहत्कौशलखण्डे ब्रह्मरामायणान्तर्गते
श्रीमद्व्यास कृते श्रीसूत सौनक सम्वादे श्रीराम
रास विलासे सीताशरण सुमति प्रकाशे
सखारास प्रकरणोनाम प्रथमोऽध्याय:

❁ सम्पूर्णमस्तु ❁

❁ ❁ ❁

## द्वितीयोऽध्याय:

### गोप कुमारिका रास प्रकरणम्

## * श्री वेद व्यास उवाच *

रोला छन्द:—

बदत विमल वर बचन व्यास उत्तम रघुवर यस।
अति रहस्य रमणीय विषय नाशक अनूप रस ॥ १ ॥
सुनत श्रवण सुख श्रवत सतत सज्जन मन भावन।
पीवत परम पवित्र हृदय अतिसय प्रिय पावन ॥ २ ॥
जिनको हियअपवित्र चरित यह श्रवण न करहीं।
करि करि कोटि कुतर्क अमित शंका मन धरहीं ॥ ३ ॥
सज्जन सुनत सनेह सहित सन्तोष न मानत।
परम रहस्य चरित्र वाहि निज सर्वस जानत ॥ ४ ॥

बोले बचन विशेष विमल श्री सूत सुजाना ।
मन बुधि चित करि सावधान सुनिये मतिमाना ॥ ५ ॥
हे शौनक एक दिवस गोमती तमसा तटपर ।
बिहरत सखा समाज सहित रघुराज रसिकवर ॥ ६ ॥
लखि तब रूप अनूप अमित गोपिका कुमारी ।
परम प्रीति रस पगीं अपनपौ प्रभु पर वारी ॥ ७ ॥
कियो मनोरथ मधुर मिलैं प्रीतम मोहिं रघुबर ।
कोटि कोटि कन्दर्प दर्प हर सरस सुघर वर ॥ ८ ॥
विश्व विधाता विश्व माहिं बिरचे वर वेषा ।
सब सौन्दर्य समेटि अधिक लागत रसिकेशा ॥ ९ ॥
अखिल विश्व सुभगता लसत जिनके नखमाहीं ।
रूप गर्विता सद्गुण निधि ललना हर्षाहीं ॥१०॥
सचराचर जग जन्तु जहाँ लगि जगत मझारी ।
आकर्षत निज ओर देत सुख अवध बिहारी ॥११॥
अद्भुत अमल कलंक रहित राकेश सुहावन ।
तेति ते अति अह्लाद देत रघुवर मन भावन ॥१२॥
चेतन की को कहे अचेतन लता पषाना ।
मधुर माधुरी निरखि चहत अंगन लपटाना ॥१३॥
निज गुन बैभव रूप सुयस रघुवर सम रघुवर ।
जग जन्मेउँ नहिं अपर लहैं समत नहिं सुरनर ॥१४॥
अखिल हेय अपवाद रहित राघव यश पावन ।
परम उदार सुजान सुहृद सन्तन मन भावन ॥१५॥



Scanned by CamScanner

तीन लोक को सामाज्य रघुवीरहिं छाजत ।
सकल गुणाकर शीलवान रतिपति मद लाजत ॥१६॥
अस नृपकुँवरहिं पाय प्रजा सब विधिहिं मनावे ।
कब रघुनन्दन नृपति होहिं मन में ललचावे ॥१७॥
अवलों जिन ने पाणि ग्रहण नहिं केहु को कीनो ।
अपनी पत्नी मानि प्रेमरस काहु न दीनो ॥१८॥
पुनि यह उठेउ विचार यथा यह राज कुँवर हैं ।
रूप शील गुणवान सरस नायक नटवर हैं ॥१९॥
तथा इन्हीं के योग्य परम उत्तम कुलजाई ।
रूपवती गुणवती संग सम्बन्ध सुहाई ॥२०॥
वात्सल्य सौशील्य गुणाकर परम उदारा ।
सेवत सखा सनेह सहित सम वयस अपारा ॥२१॥
पुनि पितु आज्ञा पाय करत स्वच्छन्द बिहारा ।
अखिल विश्व मन रमन रूप सौन्दर्य सँवारा ॥२२॥
पुनि श्रीपति से अधिक रूप गुणशील सुजाना ।
वय कुमार सम्पन्न राजनन्दन मतिमाना ॥२३॥
गोमति तमसा सुतट निकट विचरत रसिकेशा ।
अनुपम रूप सजाय सखन सँग परम रसेशा ॥२४॥
विधु बदनी वर बाल विलोचनि मृग पिक वैनी ।
रूप उदार अपार सरल सुन्दर सुख दैनी ॥२५॥
जिन ने नाहिन अन्य पुरुष को निज पति मानो ।
कठिन सुपति व्रत ठानि विषय को सुखनहिं जानो ॥२६॥



Scanned by CamScanner

नीच जाति हम गोप सुता यह राजकुमारा।
इनकी समता माहिं मिलत नाहिन व्यवहारा ॥३८॥
तदपि स्वभाव उदार भक्ति को नाता मानत।
जो अनन्य व्रतवान वाहि अपनो करि जानत ॥३९॥
रसिक शिरोमणि भक्त मात्र प्रतिपालन हारे।
भक्ति सतत प्रिय इनहिं सन्त श्रुति शास्त्र पुकारे ॥४०॥
तो अवश्य हम सकल होहिं इनको सुखरूपा।
करि सेवा कमनीय देहिं रस स्वाद अनूपा ॥४१॥
भक्त मात्र प्रिय इनहिं सकल हम पद अनुरागी।
तो यह करिहैं अवसि हमहिं अतिसय बड़भागी ॥४२॥
करिहैं मम कर ग्रहण रंचहू संसय नाहीं।
इनको तजि नहिं अन्य पुरुष स्पर्श कराहीं ॥४३॥
हम सब इनके लिये समर्पण तन मन कीनो।
बिना मोल हम विकीं सतत चित इनहीं दीनो ॥४४॥
जो पै खाय न देह कठिन यह काल भुजंगा।
तो अवश्य रस रंग जंग करिहौं पिय संगा ॥४५॥
अगर काल की ग्रास होइ यह देह हमारी।
पुनि दूसर तन माहिं मिलहिं प्रीतम धनुधारी। ४६॥
पर न अन्य को वरहिं कठिन व्रत हमने धारो।
इन पर जीवन प्राण अपनपौ हम सब वारो ॥४७॥
हम अति श्रद्धा सहित होहिं इनकी पद दासी।
पावहिं पावन प्यार सतत याही की प्यासी ॥४८॥



Scanned by CamScanner

यहि विधि करि भावना प्रवल निश्चय मनकीना ।
तप अभिमत फल दानि अस्तु तप में चितदीना ॥४६॥
श्री तमसा गोमती सुजल में निज तप ठान्यो ।
पंचाक्षर निज जाप्य मन्त्र शंकर को मान्यो ॥५०॥
आसुतोष अवढर सुदानि शिव कृपानिधाना ।
करिहैं मम अभिलाष अवसि पूरण भगवाना ॥५१॥
परम कृपा की मूर्ति अहैं गिरिराज कुमारी ।
वे अवश्य करि कृपा पूजिहैं आश हमारी ॥५२॥
करि विनती निज प्राणनाथ से मम संकल्पा ।
दैइहैं पूर्ण कराइ उन्हें श्रम होइ न स्वल्पा ॥५३॥
यहि प्रकार मन सोचि सतत शिव सहित उमापद ।
पूजन करैं सप्रेम करहिं स्तुति स्वर गद गद ॥५४॥
पर निज लक्ष अलक्षि रूप नहिं काहु बतावें ।
प्रवल साधना करहिं निरन्तर मोद मनावें ॥५५॥
यहि बिधि करहिं क्लेश कठिन श्रम शोक न मानहिं ।
मिलिहैं वर रघुवंश कुँवर निश्चय मन जानहिं ॥५६॥
लखि साधन अति प्रवल प्रगट भइं शिवा सिहाई ।
दै अभिमत वरदान सबनि मन मोद बढ़ाई ॥५७॥
पुनि अन्तर्हित भईं मर्म काहू नहिं जान्यों ।
गोप कुमारी प्रेम पगीं मन आनँद मान्यों ॥५८॥
जब कोइ चेतन चहत शरण रघुनन्दन केरी ।
प्रभु अति मृदुल स्वभाव करत पलकहुँ नहिं देरी ॥५६॥


Scanned by CamScanner

वाहि शीघ्र अपनाय सकल दुख द्वेष नसावत ।
महिमा अमित उदार अकथ श्रुति शास्त्र बतावत ॥६०॥
गोपसुतन को प्रवल प्रेम प्रभु ने पहिचानी ।
मोपर ये विक गईं बिना गथ यह जिय जानी ॥६१॥
पुनि मम भक्त महान उमापति शिवा समेता ।
करि पूजन अनुराग सहित सब भाँति सचेता ॥६२॥
कीनो उमहिं प्रसन्न लह्यो अभिमत वरदाना ।
अब अवश्य चाहिये हमें इनको अपनाना ॥६३॥
अस अपने मन सोचि हर्षयुत पितु पद पासा ।
गये ललन रघुनन्द चन्द मन परम हुलासा ॥६४॥
सादर पितु पद वन्दि विनय बहु भातिं सुनाई ।
पिता पुत्र को देत मार्ग कल्याण लखाई ॥६५॥
अनायास मम हृदय माहिं एक अति अभिलाषा ।
उठती पूरण करहु दया करि सहित हुलासा ॥६६॥
एक मास भर करौं प्रेम से नित शिव अर्चन ।
दीजे आज्ञा अवसि मोहिं करि वेगि समर्थन ॥६७॥
प्रातः भोजन किये बिना सरिता तट जाऊँ ।
अतः कर्ण चतुष्ट शुद्ध करि दिवस बिताऊँ ॥६८॥
तट पर करूँ निवास मास भर विनय हमारी ।
दीजे हर्षि रजाय वेगि नहिं करिय अवारी ॥६९॥
यहि विधि पागे प्रेम परम पावन प्रिय वैना ।
हँसि निज अंक विठाय कुँवर को भरि जल नैना ॥७०॥



Scanned by CamScanner

लखि सुन्दर मुख चन्द्र वयस अति मधुर निहारी ।
कम्पन लागे नृपति परम मृदुलता बिचारी ।।७१।।
अतिसय मधुर किशोर मोर किमि व्रत निरबैइहै ।
भूख प्यास अति प्रवल तितिर्षा कैसे सइहैं ।।७२।।
अस शंका चित बढ़ी प्रेम की यह प्रभुताई ।
यदपि और की हरत सकल शंका समुदाई ।।७३।।
बोले बचन सनेह सहित मुखचन्द्र निहारी ।
सुनहु ललन सुकुमार शील गुणवान अपारी ।।७४।।
अपने सरल स्वभाव मात्र से सबहिं सुखारी ।
करत देत आनन्द अमल गुरु पितु महतारी ।।७५।।
सबके प्राण अधार कष्ट कहिं हेतु सहोगे ।
केहि प्रकार भरमास वत्स अति क्लेश लहोगे ।।७६।।
मैंने तुम्हरेहि हेतु किये व्रत दान यज्ञ बहु ।
तोषित मोपर रहत सतत भगवान महेशहु ।।७७।।
फिर क्या कारण कठिन लाल तुम कष्ट उठाबहु ।
मम दृग आगे सखन सहित सुख सब बिधि पावहु ।।७८।।
आवश्यकता नहीं व्यर्थ क्यों तन कृश करिहो ।
सब सुख सम्पति अछत कष्ट नाहक शिर धरिहो ।।७९।।
कष्ट करै सो जाहि होइ सम्पति की आशा ।
अखिल लोक को राज सकल बसुधा तव पासा ।।८०।।
तपके फलस्वरूप सकल सिद्धी तव लागी ।
चहत अंग स्पर्श करैं तप अति अनुरागी ।।८१।।



Scanned by CamScanner

अति रसमय वात्सल्य सने सुनि पितु के बैना ।
बोले बचन विनीत सकुच युत राजिव नैना ॥८२॥
सत्य सत्य तव बैन परम प्रेमामृत साने ।
पर सुनिये मम बचन आप हैं वृद्ध सयाने ॥८३॥
विश्व नाथ व्रत करौं परीक्षा मैने कीन्हीं ।
आप परम वात्सल्य लीन आयसु नहिं दीन्हीं ॥८४॥
राउर सुवन कहाय प्रतिज्ञा जो नहिं पालौं ।
सकल धर्म मय आप केर उज्वल जस घालौं ॥८५॥
बिना प्रतिज्ञा पूर्ण किये मैं रहि न सकाऊँ ।
नाहिन अस सामर्थ हृदय में अति सकुचाऊँ ॥८६॥
यहि विधि सुनि प्रिय पुत्रकेर अति अद्भुत बानी ।
अखिल विश्व आनन्द कन्द सुन्दर सुख दानी ॥८७॥
भाव भरी रस भरी अमल अतिसय मन भावनि ।
पायो पितु ने मोद अधिक सुनि गिरा सोहावनि ॥८८॥
दीन्हें आशिर्वाद बिपुल पुनि कहा कुँवर वर ।
चित चिंता मिटि गई नहीं शंका प्रमोद उर ॥८९॥
जिरंजीव हो वत्स सतत तुम पर त्रिपुरारी ।
अति सब रहें प्रसन्न देहिं वरदान अपारी ॥९०॥
होवो पूरण काम सुनत पितु की शुभ बानी ।
अति ही भये प्रसन्न हृदय में सॉरग पानी ॥९१॥
तेहि दिन ते करि नियम सतत पूजत त्रिपुरारी ।
करत सरित स्नान अमल सरसिजन उतारी ॥९२॥



Scanned by CamScanner

हे शम्भो हे विश्वनाथ गिरीश हे शंकर।
हे त्रिनेत्र हे व्याल अलंकृत हे त्रिशूर धर ॥६३॥
हे डमरु धर हे नीलकण्ठ हे जटा जूट धर।
हे उमेश हे गिरजापति हे कैलाशेश्वर ॥६४॥
हे भगवन हे विश्वेश्वर हे विश्व ग्रास कर।
हे काशीश्वर अहो महेश्वर हे गंगाधर ॥६५॥
हे तिमिर राक्षस शत्रु अहो सर्वज्ञ कृपामय।
हे निशेशधर हे कालानन हे करुणामय ॥६६॥
हे विद्याधर हे उदार हे श्री गंगाधर।
दक्षध्वंसन दक्ष भस्म धारण करता हर ॥६७॥
होइय आसु प्रसन्न दीजिये रसमय दर्शन।
कीजै कृपा कृपालु होउ प्रत्यक्ष सहर्षन ॥६८॥
यहि विधि स्तुति करत नमित शिर अधिक भाव भर।
प्रगटे पूरक अखिल मनोरथ विश्वनाथ हर ॥६९॥
प्रगटेउ वैभव अमित संग स्वर मधुर सरस तर।
बोले बचन विशेष विमल वर विश्वेवर हर ॥१००॥

दो०–श्री रघुवर को भाव लखि, प्रग हर गौरीश।
वैभव वलित अनेक विधि, लीने संग में ईश ॥१॥

सुनहु राम रघुवंश हंस अवतंश ज्ञान घन।
ब्रह्म सच्चिदानन्द कन्द दायक अशेष मन ॥ १ ॥
नाम कीर्तन आप केर सुचि सुखद सुधा सम।
पावन अति प्रिय मधुर सरस अघ हर उदार तम ॥ २ ॥


Scanned by CamScanner

सुनत सोहावन सुयश कीर्तन रत बड़ भागी ।
स्वर्ग मोच्च सुख सकल तजत त्रण सम अनुरागी ॥ ३ ॥
होवत पूरण काम मधुर मूरति तव ध्याई ।
कहहु नाथ कामना कवन प्रभु के हिय आई ॥ ४ ॥
जो करि यत्न अनेक भाँति से मोहिं बुलायो ।
कवन मनोरथ पूर्ण करौं मैं जानि न पायो ॥ ५ ॥
मैं तो हौं अवधूत पास कछु बस्तु न मेरे ।
जाको चाहत आप कहहु मैं देहुँ सबेरे ॥ ६ ॥
पलहु बिलम्बन न करौं देहु आयसु हर्षाई ।
सुनि शिव बचन सनेह सहित बोले रघुराई ॥ ७ ॥
सर्व रोग दुख शोक सकल चिंता हर रघुवर ।
बदत विमल वर वैन मधुर तम सुखद सरस तर ॥ ८ ॥
गोप कुमारी अमित सरित जल माहिं कठिन व्रत ।
करहिं हमहिं पति चहहिं सकल मम पद पंकज रत ॥ ९ ॥
पूरण मैं केहि भाँति करौं सोइ कहहु उपाऊ ।
प्रेमिन प्रेम न गहौं कदा नहिं मोर सुभाऊ ॥१०॥
जब जन मम दिशि चलत धरत साधक मग पाऊँ ।
मैं वाकी करि योग च्छेम मन मोद बढ़ाऊँ ॥११॥
पूजौं हिय अभिलाष सकल व्रत यही हमारो ।
जग उजरै या रहै नियम मम जात न टारो ॥१२॥
फूलै वर्षा बाद कांश तेहि विधि शिव शंकर ।
बिहँसे सुनि प्रभु बचन नमत बहु बार हर्षिउर ॥१३॥


Scanned by CamScanner

बोले हे कल्याण रूप रघुवंश विभूषन ।
कार्य कारण रूप असत सत हत सब दूषन ॥१४॥
अखिल जगत स्थूल सूक्ष्म के परम अधीश्वर ।
प्रभु सब भाँति समर्थ मोहिं पूंछत सर्वेश्वर ॥१५॥
जगत रचयिता आप स्वयं संचालक पालक ।
जनहित कारण प्रगट होत खल दल बल घालक ॥१६॥
सर्व समर्थ उदार चहत मोहिं से वरदाना ।
दासन आदर देत सतत प्रभु कृपानिधाना ॥१७॥
मम कीरति बिस्तार करन हित हे रघुराई ।
मागत सकुच समेत जोरि कर शीश झुकाई ॥१८॥
सकल काम प्रद नाथ नहिं स्वीकार करीजै ।
रमि रमाय निज अंग संग मन मोद भरीजै ॥१९॥
तुम प्राणन के प्राण जीव के जीवन दाता ।
प्राणहुँ ते सब भाँति सबहिं प्रिय निज जन त्राता ॥२०॥
प्रेम दान दे उनहिं कीजिये निज पद दासी ।
ये रमणी रस रूप सकल प्रेमामृत प्यासी ॥२१॥
कीजिये इनके साथ रमण रस रास विलाशा ।
दीजै पावन प्रेम प्यार करि पूजहु आशा ।२२।
बसुन्धरा में वेस कीकती रत्न अपारा ।
अग्र भोक्ता सबहि केर रघुवंश कुमारा ॥२३॥
नृप नन्दन तुम अखिल भुवनपति परम उदारा ।
रत्न भूत जे बस्तु सबनि पर तव अधिकारा ॥२४॥



Scanned by CamScanner

गोप कुमारी महाँ रत्न रूपा गुण खानी।
रमणीयां रस रूपवती अनुपम सुखदानी ॥२५॥
स्वयं भोक्ता आप त्यागि संसय मन माहीं।
तजिये सब संकोच दोष तुम कहँ कछु नाहीं ॥२६॥
हे प्रभु पोषण प्रेम तोष प्रद परम कृपाला।
पालहु इनको प्रेम प्रणतहित रूप रसाला ॥२७॥
हैं प्रभु परम प्रवीण ज्ञाननिधि चतुर शिरोमनि।
हौं पद पद्म पराग भृत्य समुझावत नहिं बनि ॥२८॥
आत्मेश तुम अखिल आत्म हू के नायक।
जहँ लगि यावत वस्तु भोक्ता हे सब लायक ॥२९॥
हे जनेश रघुनन्द कन्द आनन्द द्वन्द हर।
हम तन सेवक सतत करब सहयोग हर्षि उर ॥३०॥
जेहि ते इन सब गोप सुतन पितु बन्धु मझारी।
तव सँग नहीं विरोध होय हे अवधविहारी ॥३१॥
कीजै आप विहार अमल रस रास सुखारी।
ये रमणी रति रंग जंग क्रीड़न अधिकारी ॥३२॥
श्रुति मर्यादा रहे काहु विधि नष्ट न होई।
निज प्रयास भरि यत्न करबि मैं ऐसी सोई ॥३३॥
हे राघव हे धर्म धुरन्धर सुचि कुल जाये।
तव कीरति अति अमल सर्व लोकन में छाये ॥३४॥
कोटि कामिनिन अंग संग करि रति रस लीजे।
रमि रमाय तिन काहिं प्रेम रस स्वाद सु दीजै ॥३५॥



Scanned by CamScanner

ललनागण रस रंगे पगे रस लम्पट मन चित।
साधू सुजान सनेह सरस हिय कमल अमल बित ॥३६॥
बने रहें आनन्दकन्द सर्वदा एक रस।
सन्त सरल सुनि सुयश रावरो होहिं प्रेम बस ॥३७॥
माने निज हृदयेश आप को परम रसिक वर।
रूप शील लावन्य माधुरी सुचि सनेह घर ॥३८॥
गुणसागर सौन्दर्य सिन्धु सुख सिन्धु मनोहर।
रस स्वरूप रससिन्धु मगन रस रमन सु छविधर ॥३९॥
ज्ञान शक्ति वल वीर्य आदि षडवाच्य अनूपम।
जानत अति विज्ञान वान जे आत्म स्वरूपम ॥४०॥
स्थित निशिदिन रहत अपर को जानन हारो।
अन्धो जानो वाहि तर्क जो निज मन धारो ॥४१॥
ऐसो को सामर्थ पुरुष तब निरखि निकाई।
परम माधुरी पान करैं पर नहीं विकाई ॥४२॥
धरि वामा बपु जो न चहे तव अंग संग रस।
चाखि अधर रस परसि अमल अँग होय अवसि बस ॥४३॥
रूप अनूप विलोकि प्रेम बस गोप कुमारी।
मोहीं हे रसिकेश रास रस रमन विहारी ॥४४॥
यहि बिधि दै बरदान भये शिव अन्तरधाना।
तब अति हर्ष समेत चले रघुवीर सुजाना ॥४५॥
आये गृह गुरु मातु पिता पद पंकज लागे।
सहज सुभाव सनेह सहित अतिसय अनुरागे ॥४६॥

गोप कुमारिन केर मनोरथ पूरक रघुबर।
विहरत सँग प्रिय अनुज सखा डबे सनेह सर ॥४७॥
पर यह गुप्त रहस्य प्रगटि काहू न जनायो।
यदपि ध्यान सर्वदा रहत पर अधिक दुरायो ॥४८॥
यहि विधि बीते काल कछुक पितु आयसु पाई।
कालिन्दी तट गये करन मृगया रघुराई ॥४९॥
पावन सुभग बसंत निरखि मन मथ मन मोदा।
गोप कुमारिन संग करहिं गे विविध विनोदा ॥५०॥
मैं लहि भल संयोग करौं सेवा सुख पाई।
प्रभु लीला अनुरूप मदन नित होत सहाई ॥५१॥
गोप सुतनि तप किये दियो शिव ने वरदाना।
भक्त कल्प तरु सरिस सुखद रघुवीर सुजाना ॥५२॥
याते परम प्रवीन रसिक वर निकट सिधाये।
करि यहि भाँति विचार हृदय मन मथ हर्षाये ॥५३॥
गोप सुतनि ने लह्यो इधर जब ते वरदाना।
तब से दशा विचित्र भई को करै बखाना ॥५४॥
कोटि जन्म की पुण्य उदय भइ प्रभु पद प्रेमा।
पायो परमानन्द हृदय में करि दृढ़ नेमा ॥५३॥
नित नव नव अनुराग बढ़ै मन मानस मन्दिर।
धारण सबने किये हृदय में प्रभु जग सुन्दर ॥५४॥
प्रगटै अस भावना प्रवल घर तजि चलि जाऊँ।
केहि विधि जीवन प्राणनाथ के दर्शन पाऊँ ॥५७॥



Scanned by CamScanner

छूटे सब गृह जाल मिलैं प्रभु सुहृद सनेही ।
भावत नहिं घर द्वार लगी निशिदिन रह येही ॥५८॥
क्षण क्षण विषम बियोग नाथ को सह्यो न जाई ।
विरहानल अतिप्रवल परमदुख कह्यो न जाई ॥५९॥
पल भर नहिं विश्राम सतत चिंता से छाती ।
दहै बिना ही अग्नि दशा कैसे कहि जाती ॥६०॥
उसी समय शिव हृदय सुमिरि अपनो वरदाना ।
गोप सुतनि पर दया कीन अति परम सुजाना ॥६१॥
जब चेतन प्रभु ओर चलत तन्मय हो जावे ।
तब प्रभु की प्रेरणा विविध संयोग बनावे ॥६२॥
शिव सुजान निज गण निकुम्भ को पास बुलाई ।
दी आज्ञा मन मुदित शीघ्र तमसा तट जाई ॥६३॥
जमुना से गोमती आदि तमसा तट माहीं ।
जहाँ गोप गण बसत उपद्रव करौ तहाँहीं ॥६४॥
पवन बबन्डर बाँधि संग बहु व्याप्त अपारा ।
ऐसो करतब करो करैं सब हा हा कारा ॥६५॥
ऐसी करनी माहिं अहो तुम परम सयाने ।
बहुत कहा समुझाय कहौं अब बिलंब न आने ॥६६॥
सुनि शिव बचन निकुंभ हृदय भरि परम हुलासा ।
धरि आयसु शिर नाय चलेउ कालिन्दी पासा ॥६७॥
संग पवन अति तीव्र सबहिं उद्वेग प्रदाता ।
चलेउ अमित उत्पात करत हिय में हर्षाता ॥६८॥



Scanned by CamScanner

अंधकार अति भयेउ भयंकर दृश्य दिखाई ।
गर्जहिं व्याघ्र वृकादि शब्द भयभीत सुनाई ॥६९॥
भभरि भगीं सब भैंस परम भय युत सब धेनू ।
भागीं अति अकुलाय लगी बर्षन बहु रेनू ॥७०॥
याते सिगरे गोप भये सम्भ्रान्त दुखारी ।
खोजत निज निज गाय भैंस मन सोच अपारी ॥७१॥
निज पशु खोजन गये भवन तजि जहँ तहँ लोगा ।
गोप कुमारिन काहिं मिल्यो अति भल संयोगा ॥७२॥
सुना रहा अस प्रथम यहाँ आये रघुराई ।
अस शुभ अवसर पाय गईं प्रभु ढिग हर्षाई ॥७३॥
कोटि मदन मद मार रूप मनमथ मद छाके ।
झमत अति रस मत्त सरस चितवनि दृग बाँके ॥७४॥
अन्तरयामी अति रसज्ञ रघुकुल मणि भूषन ।
देखा उन्हें प्रणाम करत सब बिधि हत दूषन ॥७५॥
परम सुन्दरी गोपसुता कटि सूक्ष्म मनोहर ।
सब लक्षण सम्पन्न मधुर रस भरीं नमित शिर ॥७६॥
तिनको पावन प्रेम प्रवर्धन हित रघुनन्दन ।
बोले बचन सनेह सहित सब विधि रस रंजन ॥७७॥
मन्द मन्द मुसुकाय कहेउ यह निशा अँधेरी ।
परम भयावनि राति जाहु घर करहु न देरी ॥७८॥
तजि निज माता पिता बन्धु गृह पुर परिवारा ।
आईं क्यों मम निकट सहत दुख अमित प्रकारा ॥७९॥



Scanned by CamScanner

यह कानन गम्भीर शून्य अतिसय भयकारी।
निशा अँधेरी रूद्र देव गण करत खिलारी ॥८०॥
पुलस्त वंशोद्भवा जातुधानी मन मानी।
विचरत कानन कठिन दुखी करि सब जग प्रानी ॥८१॥
हम आईं तव पास कहहु यदि तुम सब वाला।
करि मो कहँ स्वीकार देहु रस रास रसाला ॥८२॥
तो निज मन में सोचि लेहु तुम परम सयानी।
गोप सुता तुम सकल राजसुत हम जग जानी ॥८३॥
नृप अथवा नृप कुँवर मित्र काहू के नाहीं।
इनसे सदा सचेत रहे डरतो मन माहीं ॥८४॥
सेवक सो अपराध होइ वाहू को त्रासा।
देवत विविधि प्रकार डरत याते सब दासा ॥८५॥
कैसें समता होय हमारी तव सँग माहीं।
मृग नयनी तुम उदासीन हम रहहिं सदाहीं ॥८६॥
याते नृप या राजकुँवर से प्रीति न करहू।
करैं नहीं विश्वास विपति अपने शिर धरहू ॥८७॥
याहू पर हम दोष रहित सुचि चरित्र हमारो।
जानि बूझि को पाप कमावे अस मत वारो ॥८८॥
राजन के बहु नारि रहहिं याते तुम काहीं।
जीवन भर दुख रहे परम सुख सपनेहुँ नाहीं ॥८९॥
बिन बिवाह सम्बन्ध होइ जेहि नारी संगा।
आगे वाको मान स्वभाविक होवे भंगा ॥९०॥



Scanned by CamScanner

यदि यह तुम सब कहो ब्याह मो से करि लीजै ।
अपनी सुचि अर्धांग भामिनी मो कहँ कीजै ॥९१॥
अस सम्भव तिहुँ काल माहिं नहिं सुनहु सयानी ।
तुम अहीर कुल सुता यदपि छवि निधि गुण खानी ॥९२॥
हम उत्तम कुल भानु बंश पुनि चक्रवर्तिसुत ।
त्रिभुवन पावन सुयश अमल शुभ गुण समूह युत ॥९३॥
याते नहीं बिबाह होय तुम्हरे सँग मेरो ।
बिन बिबाह सम्बन्ध होय केहि भाँति घनेरो ॥९४॥
बिना घनो सम्बन्ध होय किमि रास बिलासा ।
याते निज घर जाहु त्यागि मनकी सब आसा ॥९५॥
कारण अपर महान मोहिं नृप जब युवराजा ।
देवें शीघ्र बनाय जुरै जब सकल समाजा ॥९६॥
तबहों बिघ्न अनेक अस्तु यह परम महाना ।
याते तजि सब आस करहु निज गृह प्रस्थाना ॥९७॥
बोलीं तब सब बाल राखना हमहिं दुराई ।
सुनि तिनके वर वैन विहँसि बोले रघुराई ॥९८॥
छिपके जो सुख होय सुमुखि सो कुछ क्षण काहीं ।
वाहू में डर बनो रहत शंका मन माहीं ॥९९॥
पुनि चोरी को लगै पाप अपकीरति होई ।
लागत कुलहिं कलंक जानि अस करै न कोई ॥१००॥

दो०–याते जो बुद्धि वन्त हैं, चोरी करत डरात ।
जो अज्ञानी जीव हैं, चोरी करि हर्षात ॥२॥

बुद्धिवान जे विज्ञ कर्म अस कबहुँ न करहीं ।
अज्ञानी करि मोह बिबस भवसागर परहीं ॥ १ ॥
अतः सकल मृदु अंगि सुनैनी कोकिल वैनी ।
शीघ्र लौटि घर जाहु होय प्रिय जन सुख दैनी ॥ २ ॥
हम दोउन को मान रहे लांछन नहिं काहू ।
मानि मोरि सिख वेगि लौट अपने गृह जाहू ॥ ३ ॥
जाहु करहु जनि देर सुनहु किन बात हमारी ।
बोलत मृदु मुसुकाय काम वर्धक धनुधारी ॥ ४ ॥
बाहर से प्रभु कहत वेगि घर जाहु सुनैनी ।
समुझि हृदय को भाव प्रणय वश सब पिक वैनी ॥ ५ ॥
बोलीं अति झुँझलाय प्रणय युत बचन सँवारी ।
एक साथ सब बाल सखी यह परम पुजारी ॥ ६ ॥
चक्रवर्ति नृप कुँवर सुनहु सखि परम स्वतंत्रा ।
जो मन भावत करत होत नाहिन परतंत्रा ॥ ७ ॥
पर मेरे भी सत्य बचन सुनिये रघुनन्दन ।
काम प्रवल सब भाँति ज्ञान विज्ञान विभंजन ॥ ८ ॥
भय लज्जा अरु बुद्धि धैर्य को खैंचि नसावै ।
अनुचित उचित अयोग्य योग्य को तोरि बहावै ॥ ९ ॥
पुनि तव रूप अनूप देखि अति काम सतावे ।
अनायास उत्पन्न होय मर्याद भुलावे ॥१०॥
निरखि माधुर मधुरी निपट मम मन अनुराग्यो ।
सब इन्द्री ब्यापार शून्य मन्मथ रस जाग्यो ॥११॥



Scanned by CamScanner

अन्तःकरण समेत देह भइ सिथिल हमारी।
नहिं चलि सकौं न सोचि सकौं हिय बिभ्रम भारी ॥१२॥
ताहू पर रसिकेश राजनन्दन सुकुमारे।
कहत जाहु निज सदन सकुच तजि प्राण अधारे ॥१३॥
सुनहु हृदय मन हरन रमन रति रसिक रसाला।
प्रेमिन सुखदातार सरल सुचि सहज कृपाला ॥१४॥
पावौं प्रेम प्रधान प्रवल उत्कन्ठा येही।
प्रीतम प्रीति निधान सतत सब भाँति सनेही ॥१५॥
आकर्षण करि प्रेम रावरो हम सब काहीं।
लायो तब पद कंज मंजु ढिग मम बस नाहीं ॥१६॥
जो तजि तव पद पद्म जाउँ चलि दूसर ठाऊँ।
कीजै निज किंकरी पाद पंकज लपटाऊँ ॥१७॥
करै आपसे प्रेम वाहि सब विधि अपनाई।
देवत प्रभु सुख स्वाद सहज रस सिन्धु डुबाई ॥१८॥
यह तव सहज स्वभाव वाहि काहे बिसराई।
तुम सब निज निज सदन जाहु यौं कहत बनाई ॥१९॥
अपनी दासी जानि प्रीति भाजन मोहिं कीजै।
रस निधि परम उदार तपनि उरमें नहिं दीजै ॥२०॥
याही से हे प्राणनाथ हम सब तव पाशा।
आईं सब जग छोड़ि एक आपहि की आशा ॥२१॥
हैं हम सब अति खिन्न नहीं सामर्थ हमारी।
जाहिं त्यागि पद कंज बात चित लेहु विचारी ॥२२॥



Scanned by CamScanner

यह मनोज अति सबल सम्बरासुर जेहि मारेउ।
जल थल अम्बर माहिं सुरासुर नर मुनि हारेउ ॥२३॥
निज सर्वस हम मान चुकीं तुम को रघुनन्दन।
पूरन कीजै आश देहु रति रस सुख कन्दन ॥२४॥
प्रेमावेश विशेष प्रश्न प्रभु से सब करहीं।
हे प्रिय सुन्दर श्याम काम ऐसे नहिं सरहीं ॥२५॥
उत्तर दीजै मोहिं पुरुष अस को जग माहीं।
कोटि मदन मद दमन रूप लखि मोहै नाहीं ॥२६॥
जो नहिं हो आशक्त वाहि हम को बतलाओ।
हम अबलन की कौन कथा जो ज्ञान सिखाओ ॥२७॥
अखिल प्रपंच मझार चराचर नर अरुनारी।
मोहित तुमहिं निहारि होत हे अवधबिहारी ॥२८॥
कहिये तुम सम अपर पुरुष जगमें कोउ सुन्दर।
दीजै वाहि बताय जाहिं तेहि ढिग हम मुद भर ॥२९॥
अमित कोटि ब्रह्माण्ड चराचर के प्रभु हैं पति।
बदत विमल वर वैन वेद विद संत सरल मति ॥३०॥
पुनि स्त्रिन को आपहिं एक सुख स्वाद प्रदायक।
गुणागार रस सार रास रंजन रघुनायक ॥३१॥
पुनि कहिये गुण रूपवती अवला जग को है।
जो लखि रूप उदार आप को नाहिन मोहे ॥३२॥
निज गुण रूप गुमान भरी धीरज मन धारै।
रमन लालसा छोड़ि बहुरि नहिं तुमहिं निहारे ॥३३॥



Scanned by CamScanner

उत्तम कुल उत्पन्न अहैं हम राजकुँवर वर।
गोप सुता तुम सकल कहे यह बैन सु छविधर ॥३४॥
तुम्हरे सँग सम्बन्ध उचित नहिं हमरो होई।
जो कोइ सुनिहै श्रवण दोष मोंहि दैइहै सोई ॥३५॥
याको उत्तर आप कृपा करके सुनि लीजै।
पुनि जो प्रश्न हमार सबनि को उत्तर दीजै ॥३६॥
नर नारी सुर असुर यक्ष गन्धर्व महामुनि।
सचराचर जग माँहि बात सब की सुनिये पुनि ॥३७॥
कहिये जब अति काम विबस होवै कोई प्रानी।
राव रंक सुर सिद्ध होय मूरख या ज्ञानी ॥३८॥
ऊँच नीच को भेद भाव जानतहु न मानत।
जिमि कोउ प्यासा बिकल नीर लखिके ललचावत ॥३९॥
कैसहु जल मिलि जाय वाहि पी प्यास बुझावत।
तब चेतन चित होत हृदय में आनँद पावत ॥४०॥
सुचि अरु असुचि बिचार करै तो प्राण गनावै।
नीचहु करसे असुचि नीर पी जान बचावै ॥४१॥
मीठा खारा स्वाद न तेहि क्षण खोजत कोई।
उत्तम द्विज किन होय यही सब की गति होई ॥४२॥
ऐसेइ कामी काम बिबस केहु की तिय पावैं।
तेहि सँग करि रति जंग काम बासना बुझावैं ॥४३॥
येहि बिधि हे रघुवंश हंस अवतंश रसिकवर।
हम सब काम विमुग्ध निरखि तव रूप मधुर तर ॥४४॥



Scanned by CamScanner

याते हे हृदयेश रास रस सुख मोहिं दीजै ।
सब बिधि मोहिं अपनाय काम क्रीड़ा कल कीजै ॥४५॥
आप कहें तुम काम बस्य हो हम तो नाहीं ।
तो हम तजि मर्याद व्यर्थ क्यों पाप कमाहीं ॥४६॥
याको उत्तर सुनहु रास रस लम्पट प्यारे ।
परम सुशील उदार सरस मन हर सुकुमारे ॥४७॥
जा को ब्यापे काम उचित अनुचित बिसरावे ।
ऊँच नीच तजि किसी कामिनी काहि रमावे ॥४८॥
जाति पाँति सुचि असुचि रूप गुण देखत नाहीं ।
कामातुर संकोच लाज तजि रमण कराहीं ॥४६॥
ऐसो काम कमाल कलित कीरति जग जाकी ।
देखि तिहारो रूप होत मोहित मति वाकी ॥५०॥
सोउ बनि वामा रूप चखत तव अंग संग रस ।
सकहि न निजमति रोकि होय सबविधि तुम्हारे बस ॥५१॥
तब फिर कहिये सत्य आप सम कामी कोहै ।
याही ते तब प्रीति पगी मेरी मति मोहै ॥५२॥
सब दिन इक रस रहे नास कबहूँ नहिं होई ।
गुणागार सुख रूप धाम कबहूँ नहिं कोई ॥५३॥
याते हम आजानु बाहु आश्रित हो आईं ।
निरखि निकाई नीक नमित नव नेह फसाईं ॥५४॥
दीजै अब करि कृपा बाहु आश्रय रसिकेश्वर ।
कलित कामिनी काम कला पूरक हृदयेश्वर ॥५५॥



Scanned by CamScanner

करि कर इव सुठि सुखद सरस मृदु मण्डित भूषण ।
मम अधार बर बाहु बिसद सब बिधि हत दूषण ॥५६॥
हे प्रीतम यदि आप त्याग ही हमको दइहैं ।
सब जग के ब्यवहार सकल हमसे छुटि जइहैं ॥५७॥
यह प्रभु जानत स्वयं शैन मम हिय नित करहू ।
कहि वानी विपरीत व्यर्थ मम मन दुख भरहू ॥५८॥
प्रभु मुख से सुनि त्याग मरैं नहिं जीवत रहहीं ।
जग के भोग अनेक भोगि उनमें सुख लहहीं ॥५९॥
नाथ न अस गति मोर सुनौं तव मुख से त्यागीं ।
तुरत मरैं हम सकल सत्य तव पद अनुरागीं ॥६०॥
अतएव हे कल्याण सदन सज्जन सुख कन्दा ।
हम सब को सब भाँति सदा दायक आनन्दा ॥६१॥
मम कल्याण न होय आप कल्याण सदन हो ।
मिलहि अवसि सुख स्वाद आप दुख द्वन्द समन हो ॥६२
जब सज्जन स्थान आप हे राजिव लोचन ।
तब क्यों टारत मोहि चरण से हे भव मोचन ॥६३॥
हम सबको सर्वदा आप आनन्द प्रदाता ।
तो फिर नहिं आनन्द देत क्यों हे जन त्राता ॥६४॥
हे नृप राजकिशोर सुछबि लखि लखि मन मोरे ।
उठत भावना प्रबल लहौं आनन्द अथोरे ॥६५॥
याते मम गुण अश्रु विन्दु बर्षत अधिकाई ।
गयो भीगि तन बसन प्रेम सरिता उमड़ाई ॥६६॥


Scanned by CamScanner

मेरे यह आनन्द अश्रु सब को सुखदाई ।
करिहैं जो स्मर्ण प्रेम सरिता उमगाई ।।६७।।
हे प्रिय प्राण अधार कहा तुमने गृह जाओ ।
कहि बचनामृत मधुर ज्ञान को पाठ पढ़ाओ ।।६८।।
तब से मम दृग माहिं शोक के बादर छाये ।
जहाँ परत मम दृष्टि शोक मय जगत लखाये ।।६९ ।
पुनि हम जायें कहाँ एक कारण बलवान ।
सुनहु प्राण धन प्रबल प्रेम निधि परम सुजाना ।।७०।।
पग सें सब जग चलत पाद गति नष्ट हमारी ।
भई कटाक्ष बिलोकि मधुर रसिकेश तिहारी ।।७१।।
मन्द मन्द मुसुकाय प्रेम भरि तिरछे नैननि ।
लियो मोर चित चोरि चपल चूड़ामणि सैननि ।।७२।।
पंगु भई गति मोर चलो हमसे नहिं जाई ।
तेहि पर भी नहिं काज कछुक सुनिये रघुराई ।।७३।।
और रसिक शिरमौर चतुर मृदु राजदुलारे ।
हम हैं राजकुमार आपने बचन उचारे ।।७४।।
गोप सुता तुम सकल ब्याह सम्भव नहिं होई ।
उचित नहीं सम्बन्ध कहे अनुचित सब कोई ।।७५।।
याको उत्तर सुनहु रसिक रस लम्पट मनहर ।
उचित न हो यदि व्याह बनै दासी हम मुद भर ।।७६।।
व्याह करत संकोश न कुछ दासी में शंका ।
पर लीजै अपनाय बिदूषहिं राव न रंका ।।७७।।



Scanned by CamScanner

रहित असार अपार पदारथ जग में जेते ।
परम सार विद नृपति कृपा दासी लहैं तेते ॥७८॥
जो अपार ऐश्वर्य भोग कोऊ नहिं पावे ।
नृप की दासी दास निकट अनयास सिधावे ॥७६॥
हैं सुख रस दतार आप सर्वेश्वर रघुवर ।
निज दास्यताउदार कृपा करि दीजे छबिधर ॥८०॥
अहो बिचार सु दत्त ब्यर्थ क्यों त्यागत हमको ।
जनि दीजै सन्ताप आप नृप नन्दन सबको ॥८१॥
रूपवती गुणवती परम उत्तम कुल वारी ।
सुठि सुशील सुन्दरी सरल नख सिख सुकुमारी ॥८२॥
तेहि के सँग शुभ व्याह अवहि जाही दिन होई ।
वाकी सेवा माँहि किंकरी चाहिय कोई ॥८३॥
वादिन जीवन नाथ हर्षि हम सेवा करिहैं ।
दोउन की रुचि राखि मोद मन मानस भरिहैं ॥८४॥
हम करिहैं न बिबाह विपिन बस तन तप कसिहैं ।
ऐसें यदि तुम कहो सुनत सब ललना हँसिहैं ॥८५॥
मोच्छ प्राप्ती हेत करत सब जप तप बहुविधि ।
सो पावत रावरी कृपा दासी सम सब सिधि ॥८६॥
तुमरेहि हित तप करत अमित सज्जन समुदाई ।
याते तप नहिं उचित कभी तुमको कहलाई ॥८७॥
पुनि प्रभु राजकुमार पिता माता प्रिय भ्राता ।
अनुज सनेही सखा सकल पुरजन सुखदाता ॥८८॥



Scanned by CamScanner

क्या यह प्रिय परिवार आप को आज्ञा दैइहैं ।
बिषम बियोग अपार कहो केहि बिधि सब सहिहैं ॥८६॥
क्या नहिं रुकिहैं पिता विपिन में तुमहिं पठैइहैं ।
गुरु वशिष्ठ मुनि निकर बिना तुम्हरे सुख पैइहैं ॥९०॥
हे सुन्दर सुकुमार कहों यदि यहिं विधि बानी ।
तुमहिं करत स्वीकार नसै सुरलोक सयानी ॥९१॥
यह जग अरु सुर सदन दोउन को मोहिं भय भारी ।
तो भी सुनिये राजसुवन इक विनय हमारी ॥९२॥
नित्य धाम साकेत आपको सतत अमर पद ।
वाही को लवलेश अंश सुर धाम वेद वद ॥९३॥
नित्य बिभूति आपर आप की लखि सब देवा ।
कुपित कदा नहि होहिं करैं नित तव पद सेवा ॥९४॥
सर्वात्मा परब्रह्म परम गति हे परमेश्वर ।
सब को सम लघु दीर्घ न कोइ तुमको हृदयेश्वर ॥९५॥
सब को प्राण समान आप प्रिय हे नृप नन्दन
करि सुकृपा अब ग्रहण करहु कीजै रस रंजन ॥९६॥
हे सबके प्रिय प्राण नाथ यदि रमा भवानी ।
देखें रूप उदार आप को रति रस खानी ॥९७॥
पुनि पल भर भी त्याग सकैं तुमको सोउ नाहीं ।
हम गोपन की सुता नाथ केहि गिनती माहीं ॥९८॥
इस जगतीतल मध्य कौन ऐसो वर वामा ।
जो तुम्हरी छबि निरखि होय नाहीं बस कामा ॥९९॥



Scanned by CamScanner

मदन मरोर महान जासु उर में न सतावै ।
जानि तुमहिं निज कान्त काम कौतुक न रचावै ॥१००॥

दो०—हे जीवन धन रसिकवर, रूप अनूप उदार ।
तुम सबकी मन चितहरत, तिरछी चितवन डार ॥३॥

चहै नहीं सुख स्वाद साथ में नाथ तिहारे ।
ऐसी कामिनि कलित जान में नहीं हमारे ॥ १ ॥
हम लघु जाति गमार देखि तव रूप लुभानी ।
नाहिन कछु आचर्ज सकल रति रस ललचानी ॥ २ ॥
यदि कहिये तुम सरिस अमित कन्या मम पाशा ।
आवहिं की मन मुदित चहत रस रंग विलाशा ॥ ३ ॥
सबहिं लेहिं अपनाय बढ़ै बोझा अधिकाई ।
तिन की सार सँवार माहिं होवै कठिनाई ॥ ४ ॥
यह भी कहव न उचित आप नृप चक्रवर्ति सुत ।
सम्पति अमित अपार परम वैभव विशाल युत ॥ ५ ॥
नृपन सदन में रहहिं विपुल दासी अरुदासा ।
सब सेवा करि मुदित लहत हिय माहिं हुलासा ॥ ६ ॥
सबको पोषण भरण कठिन तुम को कुछ नाहीं ।
हम रहि हैं तव प्राण प्रिया पद पंकज माही ॥ ७ ॥
चाहे सरिता अमित मिलैं सागर में जाई ।
उदधि मना नहिं करति यही उसकी प्रभुताई ॥ ८ ॥
गज को कोई कोटि सुमन माला पहिरावे ।
यदि पूछो तो वाहि तनक बोझा न जनावे ॥ ६ ॥


Scanned by CamScanner

नदी जलधि में मिलहिं वाहि कुछ हर्ष न हानी ।
घटत बढ़त नहिं कदा एक रस वाको पानी ॥१०॥
ऐसेहि चेतन अमित भाव निज निज ले आवैं ।
प्राप्त आप को होहिं चोभ नाहिन दै पावैं ॥११॥
सहन शीलता भंग होय नाहिन प्रभु केरी ।
याते कीजे ग्रहण हमें अब करहु न देरी ॥१२॥
यथा मत्त गजराज सुमन माला समुदाई ।
पहिरावै किन कोय न वोझा श्रमहु जनाई ॥१३॥
तथा आप हम सबनि काहिं अब ग्रहण करीजै ।
रंच असुविधा नहीं होय सन्सय तजि दीजै ॥१४॥
हे नरचन्द्र उदार आपके चरण अमल अति ।
ध्यावत सिद्ध मुनीश देव नर परम विमल मति ॥१५॥
तव पद सेवा करन हेत हम सब ने देही ।
पाई पाली प्रेम सहित हे परम सनेही ॥१६॥
देह आत्मा सहित सतत सब भाँति तिहारी ।
अन्य ग्रहण कोउ करि न सकै हे अवधबिहारी ॥१७॥
हम सब भोज्ञा नित्य भोक्ता आप हमारे ।
अपर ग्रहण को करै कहिय हे प्राण अधारे ॥१८॥
यथा सिंह को भाग तुच्छ शृंगाल नहिं खाई ।
तथा आप तजि अन्य मोहिं नहिं ग्रहण कराई ॥१९॥
यहि विधि प्रभु पहिचान प्रेम पावन तिन केरो ।
परक चतुर्ता युक्त भाव गम्भीर घनेरो ॥२०॥

प्रभु नायक मणि मुकुट प्रेम पारखी सरल चित ।
प्रणत जनन पर प्रीति करत सर्वदा परमहित ॥२१॥
सकल गुणन की खानि कौशलापुरी नृपतिसुत ।
जगतमात्र चातुरी पोषि शिक्षित सनेह युत ॥२२॥
चक्रवर्ति महराज सुवन पुनि रूप मनोहर ।
ताहू पर श्रृंगार ललित कीन्हे सुभव्य तर ॥२३॥
सकल जगत आकर्ष करन नव रूप सँवारी ।
भषण बसन विचित्र यथा सब अंगन धारी ॥२४॥
यथा मेघ ग्रीष्म तापित चेतन सुखदाई ।
तथा विरह संतप्त गोप कन्यन रघुराई ॥२५॥
जिमि ग्रीष्म के बाद मेघ माला जल बर्षत ।
जग के जेते जीव पाय जल सब हिय हर्षत ॥२६॥
विरह व्यथा से व्यथित तथा रघुवीरहिं पाई ।
गोप सुता लहि प्रेम सुधा सुख लिहैं अघाई ॥२७॥
उन सबको लखि प्रेम मधुर मोहन रघुनन्दन ।
बोले बचन रसाल नेह युत रति रसरंजन ॥२८॥
सुनहु नागरी सकल गोप कन्या सुकुमारी ।
मुझसे मिलने हेतु कष्ट तुम सहे अपारी ॥२९॥
कियो मनोरथ मधुर भाव भूषित अति पावन ।
सो सब पूरण होय सकल तुम्हरे मनभावन ॥३०॥
तुमने निज आत्मा देह मोहिं अर्पण कीना ।
निज जीवन को भार सकल मेरे कर दीना ॥३१॥



Scanned by CamScanner

परम एकान्तिक दिव्य स्वाद सुख पूरण लहहू ।
औरौ जो रुचि होय सकल सो हमसे कहहू ॥३२॥
मोहिं लगि करै प्रयास सकल सो पूरन होई ।
जिस आशा से यत्न करे निश्चय हो सोई ॥३३॥
जौं मेरो जन होय अज्ञ अनपढ़ अज्ञानी ।
सोउ निज अभिमत लहै बात मम सत्य सयानी ॥३४॥
यम शासक सब केर न तेहि पर शासन करहीं ।
यदि कहिं शासन करैं उलटि आपहि दुख परहीं ॥३५॥
हमने यह परिहास कियो तुम सब गृह जाओ ।
हमहिं न कछु संकोच न डर पैइहो मन भाओ ॥३६॥
कछु न असुविधा मोहिं चतुर्दश भुवन हमारा ।
प्रति ब्रह्माण्ड मझार लसत ब्रह्माण्ड अपारा ॥३७॥
यह सब अखिल प्रपंच होय मम भौंह इसारे ।
अब तजि सब संदेह लहो सुख साथ हमारे ॥३८॥
अब मम आज्ञा जाहु करहु सरयू जल मज्जन ।
भूषन बसन सजाय अंग अतिसय मन रज्जन ॥३९॥
श्री विल्वहरि में जाय वन्दि शिव पद उमंग भरि ।
आवहु सब मम पास लहहु सुख स्वाद रास करि ॥४०॥
पिय आयसु शिर धारि गईं सब सरयू पासा ।
मज्जन कीन सप्रेम हृदय में परम हुलासा ॥४१॥
कीन्ही जब स्नान उन्हें ऐसो भो भाना ।
भई दिव्य मम देह अलौकिक तेज महाना ॥४२॥



Scanned by CamScanner

भूषण बसन अनूप अलंकृत सब तन माहीं।
याते सब मन मोद भरीं अतिसय हर्षाहीं ॥४३॥
पुनि सब अति द्रुत चलीं गईं जहँ आत्म रमणवर।
रघुनन्दन चितचोर परम रसबोर सुछबि धर ॥४४॥
पियने आदर कियो सबहि कहि बचन मधुर तर।
समझायो बहु भाँति प्रेम युत परम रसिक वर ॥४५॥
प्रथम कहेउ घर जाहु बचन निरदय कठोर तम।
सो सब दई भुलाय प्यार मय बचन सुधा सम ॥४६॥
पुनि पूछेउ पिय दूर व्यथा भइ हिय हर्षानी।
बार बार पद कंज मंजु परि परम सयानी ॥४७॥
भाग्यवती सब परम प्रेम पूरित सुकुमारी।
सब अपने मन माहिं बात यह रहीं बिचारी ॥४८॥
यह ब्रह्माण्ड अपार चतुर्दश भुवन मझारी।
दुर्लभ श्रीनृप सुवन सुलभ मैं कृपा अधारी ॥४९॥
सो हम सब के क्रान्त बने भोज्ञा मोहिं जानी।
प्रीतम प्रीति प्रदान करी अपनी करि मानी ॥५०॥
याते हम सब करैं सतत मंगलमय गाना।
स्वस्ति उवाचन करहिं प्रेम युत मोद महाना ॥५१॥
पावहिं परमानन्द पगीं प्रीतम पद परसीं।
भाग्य सराहें सकल आपने अति हिय हरषीं ॥५२
चाहहिं पिय प्रिय अंग संग सब नवल नागरी।
गावहिं मंगल गीत सजन गुण गण उजागरी ॥५३॥



Scanned by CamScanner

मृदुस्वर कोकिल कंठ लजावत सुखद रसाला ।
सुनत परम रस रंग मगन मंजुल नृप लाला ।।५४।।
पुनि प्रिय प्रीति प्रधान पगीं सब सखी सयानी ।
प्रीतम प्रेम निधान अंग उबटत सुखमानी ।।५५।।
सुन्दर सरस सुगन्ध सहित सुचि सुखद सुहावन ।
तेल अंग मलि सुरभित जल अतिसय प्रिय पावन ।।५६।।
प्रीतम को स्नान करावहिं हिय हर्षाई ।
बहुरि बसन तन पोंछि नवल श्रृंगार सजाई ।।५७।।
भूषन बसन अनूप रास श्रृंगार सुमनहर ।
शोभित जनु गन्धर्व राज रस रमन सुतत्पर ।।५८।।
नेह भरे चातुर्य सहित तीक्षण कटाक्ष करि ।
निरखहिं कामिनि काम कला कौतुक उमंग भरि ।।५९।।
एक तो रूप उदार सरस सौन्दर्य सिन्धु सम ।
पुनि सुन्दर श्रृंगार सजेउ अति भव्य दिव्य तम ।।६०।।
दृष्टि दोष जनि लगै याहि डर नवल नागरी ।
राई लोन उतार करहिं आरति उजागरी ।।६१।।
निरखि बदत बर बैन हर्षि श्री सूत सुजाना ।
अहो प्रेम की प्रभा परम पावन बलवाना ।।६२।।
जो सर्वेश्वर अखिल लोक रक्षक निःशोका ।
सो हो जात अशोक सकृत जेहि ओर बिलोका ।।६३।।
सब उर बासी अमल कोशलाधीश कुमारा ।
व्यापक व्याप्य अशेष सकल जग सिरजन हारा ।।६४।।



Scanned by CamScanner

वाको ये सब आज गोप कन्या सुकुमारी ।
रक्षा हित भावना सहित कृत करत सुखारी ॥६५॥
ऐसी महिमा प्रेम केर को पावै पारा ।
येहि विधि बोलत वैन सूत सुख लहत अपारा ॥६६॥
पुनि सुलोचनी प्रीति पगीं प्रीतम हित लागी ।
छत्र चँवर व्यजनादि लिये दर्पण अनुरागी ॥६७॥
शुक सारिका अनप प्रभृति पक्षी गण लीने ।
पिय आयुध धनुवाण रूप निरखहिं रस भीने ॥६८॥
कोइ माला कोइ सुमन सुखासन विविधि प्रकारा ।
सुन्दर सुखद सोहात सखिन कर कंज अपारा ।।६९॥
ललित असतरन विविध रंग पटु पाट सँवारी ।
परदे परम विचित्र चित्र रचि अति मनहारी ॥७०॥
लसत दुसाले ललित अमित वर बस्तु अपारी ।
प्रगटत निज संकल्प सत्य सखि परम सुखारी ॥७१॥
परमानन्द प्रमोद भरीं प्रफुलित अनुरागीं ।
नवल नायिका नवल रसिकवर छवि रस पागीं ॥७२॥
येहि विधि करि शृंगार प्रेम युत पिय छवि निरखत ।
परम प्रेम रस भरीं सकल अपने मन हर्षत ॥७३॥
श्री कौशल्यानन्द बढ़ावन रूप सिन्धु सम ।
एक टक देखत सकल कामिनी काम भाव नम ॥७४॥
जिमि सरिता मिलि सिन्धु माहिं पुनि लौटत नाहीं ।
तिमि सब अनमिष लखैं बदन बिधु हिय हर्षाहीं ॥७५॥


Scanned by CamScanner

पिय छबि पर अति मुग्ध परम विह्वल सुकुमारी ।
हृदय मदन उत्साह रमण इच्छा अति भारी ॥७६॥
प्रीतम गर भुज धारि हर्षि हिंय लेहिं लगाई ।
मन चंचलता अधिक तदपि संकोच महाई ॥७७॥
प्रथम मिलन में लाज प्रवल नहिं छूटत कैसे ।
शीतलता नहिं तजै नारि कवनौ विधि जैसे ॥७८॥
यद्यपि परम प्रशंसनीय गौरव अति भारी ।
येही भूषण अमल लसत उत्तम कुल नारी ॥७६॥
अतः भई अस दशा जबहिं मूदे तब नैना ।
पर पिय के सर्वांग दर्श बिन चैन परैना ॥८०॥
भोग मनोरथ प्रवल हृदय बाढ़यो अधिकाई ।
याते मन अति दुचित भयो परितोष न लहई ॥८१॥
जब दर्शन को लोभ होय अँखियाँ खुलि जावें ।
रमण मनोरथ होत लाज बस बहुरि गिरावें ॥८२॥
इनकी ऐसी दशा निरखि सर्वज्ञ रसिकवर ।
निज सरूप में मुग्ध जानि कौतुक निधि छविधर ॥८३॥
प्रगटेउ निज संकल्प तुरत मैरेय दिव्य तम ।
सरस सुगन्धित अमल सुखद रुचिकर पियूष सम ॥८४॥
दीनो सबहिं पियाय स्वकर प्रमुदित रघुनन्दन ।
सब लज्जा संकोच दूर कीनो सुख कंदन ॥८५॥
कामोत्सव जे वृद्धि करन हारे बर नायक ।
तिन कबके सिर मुकुट मौलिमणि प्रभु सब लायक ॥८६॥



Scanned by CamScanner

पी मादक रस मगन भईं जब सखी समाजा ।
मिटेउ सकल संकोच गई तिनकी तब लाजा ॥८७॥
कोइ प्रिय प्राण अधार सुतन में कमल सुफूलन ।
मारति पिय के प्रेम पगी लखि पिय अनुकूलन ॥८८॥
कापि जघन स्तन नितम्व कोइ अमल कपोलन ।
कोइ करि कठिन कटाक्ष वाण मारति प्रमुदित मन ॥८९॥
येहि विधि प्रणय विनोद भरीं प्रमदा समुदाई ।
ऋतुपति लखि भल समय तुरत प्रगटेउ तँह आई ॥९०॥
लीला ललित रसाल क्षणहिं क्षण नव सुखकारी ।
जेहि सुख को लखि ब्रह्म लोक निन्देउ बिधि भारी ॥९१॥
व्यर्थ गुनेउ निज जन्म बिधाता तेहि क्षण माहीं ।
ऐसो अमल रसाल परम सुख मम पुर नाहीं ॥९२॥
सबसे गौरव अधिक प्रसंशा युत मम धामा ।
सर्वलोक ते उच्च शान्ति प्रद मन अभिरामा ॥९३॥
पर नहिं यह सुख मिलत कदा जो गोप कुमारी ।
पाय रहीं प्रभु संग बनी रतिरस अधिकारी ॥९४॥
बसंत उत्सव माहिं गोप कन्यन चतुराई ।
कीनी अति रमणीय साज सुंदर सजवाई ॥९५॥
करि बिभाग बहुभाँति सखिन रचि यूथ बनाये ।
राजकुमार अपक्ष अकेले रहि सुख छाये ॥९६॥
हो विमुग्ध यहि समय आप सबको सुख दैइहैं ।
अज अजीत अनवद्य आज निज हार दिखैइहैं ॥९७॥



Scanned by CamScanner

पुनि जब होली भई सखिन अति प्रणय कोप बस।
कुंकुम फूलन गुच्छ सुरँग बरसेउ बिनोद रस ॥९८॥
कोइ निज चोटी चटकि चमकि प्रीतम तन मारै।
बहुरि प्रेम मद मत बिहँसि पिय ओर निहारै ॥९९॥
कबहुँक प्रवल प्रहार देखि पिय लेत बचाई।
मलि गुलाल सुठि गाल माँहि तन शिथिल बनाई ॥१००॥

दो०–होरी के सब साज सजि; सखियन यूथ बनाय।
पिय को रँग रस बोरहीं, परमानन्द समाय ॥४॥

कबहुँक सखिन प्रहार खाय बनि मुग्ध रसिकवर।
हाथ पैर भै शिथिल नहीं चलि सकत सुछबिधर ॥ १ ॥
मुख नहिं निकसत वैन हँसी सब गई हिराई।
निज कर ताली पीट सखी गन हँसहिं ठठाई ॥ २ ॥
करत बनै नहिं कूट हास्य हूँ नहिं कर पावैं।
करि अति महाँ विमुग्ध दशा अपनी दर्शावैं। ३ ॥
लखि यह विविध विचित्र विमल उत्सव विहार रस।
ऋतु पति की क्रीड़ा बिलाश प्रभु सखिन प्रेम बस ॥ ४ ॥
बोले बचन बिशेष प्रेम भर सूत सुजाना।
यह बसंत वर बिबिध साज साजे सुख नाना ॥ ५ ॥
गोप सुतनि के साथ सदा रघुवर रस रंग भर।
करैं केलि कमनीय कला कौतुक प्रमोद कर ॥ ६ ॥
हम निरखैं निज नैन नेह नूतन नव तन तन।
यही एक अभिलाष बसै सर्बदा मोर मन ॥ ७ ॥


Scanned by CamScanner

अब श्री सूत सुजान बदत बसंत प्रभुताई।
होली उत्सव माहिं सखिन कृत जो अधिकाई ॥ ८ ॥
नवल नायिका नेह पगीं सब सुभग सोहाई।
बरसहिं खस अरु अगर सुचन्दन केशर लाई ॥ ९ ॥
उड़त गुलाल रसाल लाल नभ परत दिखाई।
बरसहिं रंग जनु मेघ बरसि सरिता उमगाई ॥१०॥
याते हो मन व्यग्र रसिक मन हर रघुनन्दन।
भागे मण्डल त्यागि सखिन क्रीड़ा रस वर्धन ॥११॥
जहँ जहँ राखत चरण स्वर्ण सम भूमि जनाई।
बनत चरण को चिह्न धरा सुर्भित हो जाई ॥१२॥
तेहि सुगन्ध हित त्यागि--जलज को अलि समुदाई।
करत मधुर गुंजार सुगन्धी लेत अघाई ॥१३॥
जब चंचल चितचोर चतुर चूड़ामणि रघुवर।
मन्डल बाहर जात निरखि सखि गन उमंगभर ॥१४॥
कलित कमल सम सुभग भुजन की माल बनाईं।
राखत पियहिं फसाय निकसि कहिं भाग न जाईं ॥१५॥
गोप सुता तेहि समय सुरन तिय निन्दन वारी।
अति रमणीय सुवेष क्षीण कटि नेह सँवारी ॥१६॥
चारों दिशि चंचला चपल चपला सी चमके।
हँसन लसन की क्रान्ति दसन दामिनि ज्यों दमके ॥१७॥
सबके मध्य महान मधुर मनरंजन रघुवर।
"सीताशरण" निहाल निरखि रस लम्पट मनहर ॥१८॥



Scanned by CamScanner

महा मुग्ध से हँसत लसत अनवद्य अजित वर।
पर प्रेमिन परतन्त्र परम प्रीतम प्रमोद भर ॥१९॥
यह गुण अमल अनूप आप में ही रसिकेश्वर।
याते अनघ अकाम कहत सर्वदा मुनीश्वर ॥२०॥
कलित कामिनिन कोटि मध्य क्रीड़ा कलोल कर।
निज स्वरूप से नहीं होत बिचलित सनेह घर ॥२१॥
नायक दोष विशेष न प्रेमिन प्रेम निवाहें।
पर प्रभु पूरण काम प्रेम निशिवासर चाहें ॥२२॥
किंचित नहीं बिकार होत रघुवर मन माहीं।
याते सन्त समाज सतत कहि अनघ सराहीं ॥२३॥
पुनः प्रेम रस पगीं युगल सुठि गोप कुमारी।
प्रमुदित कला समेत पिया अंशन भुज धारी ॥२४॥
तिन दोउन के मध्य लसत प्रीतम प्रमोद मन।
नटवर नागर नवल कला कौतुक सनेह घन ॥२५॥
नृत्यत राजकिशोर सखिन रस बोर बनाई।
कर गहि कर तिन केर करत क्रीड़ा हर्षाई ॥२६॥
नृत्य करावत सखिन कुशल गन्धर्व कला मधि।
सब विद्या सम्पन्न रसिक नटवर विद्या निधि ॥२७॥
जिन आलिन के रंग रँगे रस बस रघुराई।
निरखत "सीताशरण" सरस सागर सरसाई ॥२८॥
अपर नायिका प्रेम पगीं तिन अलिन सराहें।
हृदय अनंग उमंग रंग प्रीतम रस चाहें ॥२९॥



Scanned by CamScanner

करि कौतुक कामिनी चतुरता युत ढिग जाई।
नृत्यत प्रिय के साथ भाव अति मुग्ध जनाई ॥३०॥
किंकिणि कलिल कलोल शब्द सुन्दर सुख दाई।
गावहिं गीत सनेह सनी सखि हिय हर्षाई ॥३१॥
बाजत वाद्य अनेक मधुर स्वर सरस सुहाई।
रास थली नभ भूमि अखिल जग व्याप्यो जाई ॥३२॥
यहि बिधि विपुल निकुंज रास कौतुक करि रघुवर।
दियो परम सुख स्वाद सकल सहचरिन हृदय भर ॥३३॥
विमल बसंत बहार कीन रसमय रघुनन्दन।
सखिन सहित सुख स्वाद पगे परिकर मनरंजन ॥३४॥
भीगे सबके बस्त्र विमल अंगन लपटाने।
ललित अंग कमनीय कान्ति लखि पिय हर्षाने ॥३५॥
झीने बसन विशेष सखिन अंगन छबि झलकत।
हँसत चपल चितचोर मोरि मुख प्रमुदित किलकत ॥३६॥
आनन अमल अमोल अलक तापर लहरावैं।
मानहुँ सुधा समूह लोभ नागि झुक छावैं ॥३७॥
अलकन से च गिरत भूमि पर रंग फुहारे।
मानहुँ माली मेघ बरसि जग करत सुखारे ॥३८॥
परम सुगन्ध समेत लसत मुख सकल सखिन कर।
मुग्ध होय अलिबृन्द बैठि गूँजत तिन ऊपर ॥३९॥
जानि अमल कल कमल भ्रमर चमत हर्षाई।
याते नृत्य कलोल कला अति शिथिल जनाई ॥४०॥


Scanned by CamScanner

अतः रसिक शिर मौर नवल रस रमन बिहारी ।
आयसु सखियन दीन अपर शृंगार सँवारी ॥४१॥
भूषन बसन नवीन पहिरि सब सखी सयानी ।
दमकत द्युत तन तेज सरस सौरभ रस खानी ॥४२॥
वेनी विमल बनाय चम्पिका माल सुहाई ।
सुभग मल्लिका माल सखिन गूँथी हर्षाई ॥४३॥
भरीं परम आनन्द प्राण प्रीतम गुण गावें ।
रूप माधुरी सिन्धु मगन अतिसय सुख पावें ॥४४॥
लेंहि अलाप अनेक भाँति स्वर मधुर मनोहर ।
यांते अधिक प्रशंसनीय संगीत कला कर ॥४५॥
पुनः परमप्रिय प्राणनाथ रघुवर ने हँस कर ।
अंग संग सुख प्रेम भरी चितवन से मुद भर ॥४६॥
परत रसीली दृष्टि तुरत सब गोप कुमारी ।
भईं सकल गन्धर्व कलानिधि रस मतवारी ॥४७॥
दिव्य अप्सरा बृन्द तिनहुँ से रूप गुणाकर ।
नृत्य गीत बहु वाद्य बजावहिं उर उमंग भर ॥४८॥
कहि प्रहेलिका ललित राग निज हाव भाव भर ।
निन्दित सुर अप्सरा तिनहिं लखि भईं नमित गर ।४९॥
कोइ मृदंग कोइ वीण अपर कोइ प्रणव वाद्य वर ।
बहुविधि विपुल बजाय नवल नागरी नेह भर ॥५०॥
प्रीतम प्राण अधार रसिक रस लम्पट मन हर ।
तिनकी स्तुति करहिं सकल नायिका हर्षि उर ॥५१॥



Scanned by CamScanner

श्री नृपनन्दन रूप सुधा छाकीं अगाध रस ।
भूलि अपनपौ प्राणनाथ छबि लखहिं प्रेम बस ।।५२।।
गावहिं रस मन मत्त सकल सहचरी सयानी ।
निरखहिं रूप अनप परम सुषमा गुणखानी ।।५३।।
प्रेंमिन प्रेम प्रकर्ष हर्ष दायक नट नागर ।
अग्रगण्य शिरताज रसिक रसिया रस सागर ।।५४।।
गोप सुतन सँग कियो मधुर रस रास सरस तर ।
रंग भेद अस नाम बदत भूतल बासी नर ।।५५।।
तेहि को प्रभु बिस्तार कियो उनकी रुचि जानी ।
गौरव अपने भाग्य केर लखि ते हर्षानी ।।५६।।
जानत हम संगीत नृत्य बहु वाद्य बजावन ।
प्रगटहिं नाथ समत्त होय जौं पिय मनभावन ।।५७।।
तब निज कौशल कला सफल करिके हम माने ।
जो पिय होय प्रसन्न कला कुशला तब जाने ।।५८।।
मनकी जानन हार सहज मनमोहन मन हर ।
नट नायक नायिका नेह नतन प्रकाश कर ।।५९।।
यहिं से गूढ़ रहस्य युक्त यह रास रसाला ।
कीनो कला निकेत रसिक मंडन छबि जाला ।।६०।।
लखि यह रास अनूप सदा शिव सुखद सुजाना ।
पायो परमानन्द हृदय अति शिव भगवाना ।।६१।।
जस देखेउ यह रास कदा अस सुनेउ न देखेउ ।
याते भोले नाथ अधिक रुचि से अवरेखेउ ।।६२।।



Scanned by CamScanner

अति प्रसन्न शिव भये लखा रस रास अनूपम् ।
परम प्रेम रस सार रसिक सज्जन सुखरूपम् ॥६३॥
यह आनन्द अनूप अमल मोहन मनभावन ।
"सीताशरण" सनेह सहित सुनि सरस सुहावन ॥६४॥
अब श्री सूत सुजान कहत सुनिये सौनक मुनि ।
रास रसिक शिरताज राजनन्दन रहस्य पुनि ॥६५॥
रास कहत जेहि मध्य केलि के भेद अनेका ।
क्रीड़ा भेद अपार वदत सज्जन सविवेका ॥६६॥
रति वर्धन रति रमण सकल रमणी अभिरामा ।
रा अस शब्द सुवाच्य राज रस मुद विश्रामा ॥६७॥
रस अरु रंग सु मूर्ति राम आनन्द मोद घन ।
करत जासु मधि रास रमण क्रीड़ा समुदित मन ॥६८॥
यह परिभाषा रास केर शूक्ष्म बिधि गाई ।
यदपि मुनिन ने बहुत भाँति करि भाष्य बताई ॥६९॥
विपुल कला के भेद अमित रामा अभिरामा ।
रास करयिता रस शृंगार युत रति रस धामा ॥७०॥
अमित नायिक रमण केर सामर्थ महाना ।
सब कर स्वामी पूर्ण काम स्वच्छन्द सुजाना ॥७१॥
जासु नाम को पड़ै प्रथम अक्षर रा पावन ।
परब्रह्म परमीश जासु कीरति मनभावन ॥७२॥
रा सम्बन्ध विशेष रास रंजन रस रूपा ।
अन्य संग नहिं होय सकृत एक रघुकुल भूपा ॥७३॥



Scanned by CamScanner

पूरण प्रेम परत्व प्रभा पूरित परमीशा ।
"सीताशरण" सु स्वामि सरस वन्दित विधि ईशा ॥७४॥
यहि विधि परम विचित्र रास अद्भुत तरंग युत ।
गोप सुतन सँग रमत प्रेम परतन्त्र राजसुत ॥७५॥
क्रीड़ा विपुल प्रकार करत लखि सूत सुजाना ।
कहत सुनहु आश्चर्य महाँ शौनक मुनि नाना ॥७६॥
जो सर्वद स्वतन्त्र उभय विभूति कर नायक ।
जहाँ तलक हैं ईश वन्दि पद चहत सहायक ॥७७॥
सब जाके परतन्त्र महाँ ऐश्वर्य विहारी ।
जासु माधुरी माहिं रमत सब विश्व सुखारी ॥७८॥
जगमें नायक रमण करन हारे हैं जेते ।
रघुनन्दन शिर ताज राज पद वन्दत तेते ॥७९॥
जाको बाधा नहीं कबहुँ कोउ डारन हारो ।
जो अनन्त अनवद्य अमल एक वेद पुकारो ॥८०॥
जासु रास में करत स्वयं रक्षा त्रिपुरारी ।
रमत राम रसिकेश महाँ माधुर्य बिहारी ॥८१॥
जो सब भाँति अबाध आध गुण रहित निदोषा ।
गोप कुमारिन मध्य परम पावत सन्तोषा ॥८२॥
जैसे महाँ गमार बिकै केहु कर लै दामा ।
हो तेहि के स्वाधीन करै प्रमुदित सब कामा ॥८३॥
बस प्रभु वाही भाँति बने अति मुग्ध स्वरूपा ।
सब बाला निज संग रमावहिं रुचि अनुरूपा ॥८४॥



Scanned by CamScanner

सबके संग सप्रेम रमण करि करत सुखारी।
करत केलि कमनीय काम कौतुक बिस्तारी ॥८५॥
बने पर परतंत्र प्रेम बस अवधबिहारी।
"सीताशरण" अधार सतत सज्जन सुखकारी ॥८६॥
उस रास स्थल मध्य यदपि रघुवर एक रूपा।
गोप सुतन के प्रेम बिबस विलसत बहु रूपा ॥८७॥
सबके रुचि अनुरूप रमत सबको सुख देवत।
बने सबनि पर तंत्र नवल नायक रस लेवत ॥८८॥
रास विहार अखण्ड अमल अनुछन अतिपावन।
सकल सखिन सँग करत रमत सब को मनभावन ॥८९॥
अमित नायिकन मध्य लसत नटवर रसिकेशा।
लज्जित कोटिन काम होहिं निरखत वर वेषा ॥९०॥
यहि प्रकार श्री मान रास रस रमन बिहारी।
परम उदार समर्थ सखिन सुख वर्धन हारी ॥९१॥
उभय बिभूति मझार अपर प्रभु सम नहिं कोई।
सकल सहचरिन हृदय मध्य अनुपम सुख होई ॥९२॥
लखि लखि रूप अनूप सकल ललना छबिखानी।
प्रीतम प्यार प्रधान आप पर सब अनुमानी ॥९३॥
यहि विधि सब सुन्दरी भरीं आनन्द महाँना।
पिय बिधु बदन विलोकि करहि सब छबि रस पाना ॥९४॥
प्रीतम प्राण अधार मोहिं सबसे प्रिय मानत।
ऐसो दृढ़ विश्वास सकल बनितन उर आनत ॥९५॥



Scanned by CamScanner

अखिल भूमि नृप चक्रवर्ति सुत श्री रघुनन्दन।
आज रास में कीन अमित विधि रति रस रंजन ॥९६॥
विद्यानिधि गन्धर्व कला सम्राट रसिक वर।
प्रगट कियो संगीत विपुल रागिनी नेह भर ॥९७॥
यदि कोई कहे अनेक नायिका रमन विबादा।
यह श्रुति वरणेउ हेय सुनै सो यह सम्बादा ॥९८॥
यह रस रास अपार सकल श्रुति शास्त्रन सारा।
निश्कलंक परपंच रहित अति अमल उदारा ॥९९॥
सर्व सुखद सर्वत्र व्याप्त गुण निधि रघुराई।
पर ब्रह्म सुख रूप निरति सय प्रीति दृढ़ाई ॥१००॥

दो०–प्रीतम प्रीति प्रमोद पगि, प्रमदा गण हर्षाय।
रमि रमाय पिय संग में, निज बस रहीं बनाय ॥५॥

चारो वेद निचोड़ यही प्रभु पद रति होई।
लखि सोइ रूप अनूप गोप कन्या रस मोई ॥ १ ॥
प्रभु की अति माधुरी निरखि सब गोप कुमारी।
अतिसय प्रेम विभोर पगीं रस तन मन वारी ॥ २ ॥
परम प्रीति रस रीति मगन तन्मय सब बाला।
करहिं केलि कमनीय चखहिं सुख स्वाद रसाला ॥ ३ ॥
याते अधिक न ज्ञान अपर जगमें कोइ भाई।
आगम निगम पुराण भनित सुचि सन्त बताई ॥ ४ ॥
क्यों न होय अस प्रेम दशा तिन बालन केरी।
नित्य सु परिकर सुखद प्रगट मोहन गुन ढेरी ॥ ५ ॥


Scanned by CamScanner

अखिल विश्व गन्धर्व राज उन सबसे उत्तम।
साजे रूप अनूप मधुर रति रमन सरस तम ॥ ६ ॥
अखिल रूप सौन्दर्य सार प्रभु प्रेम निधाना।
सुन्दर सुखद सुजान सरस श्रुति सुयश बखाना ॥ ७ ॥
यहि प्रकार सब गोप सुतनि सँग पगे रास रस।
अद्भुत मण्डल माँहि लसत अतिसय सनेह बस ॥ ८ ॥
श्री नृपराज कुमार ललित पंचम स्वर माहीं।
विमल बसंत बिहार राग गावत हर्षाहीं ॥ ६ ॥
अति ऊँचे स्वर ले अलाप रसिकन मनमोहन।
राजकिशोर रसज्ञ रमत सखियन सँग सोहन ॥१०॥
बाल बधुन युत निखिल कोकिलन स्वर करि निन्दित।
शब्द सरस अभिमान मथन प्रभु लसत सु प्रमुदित ॥११॥
करत कटाक्ष अपार भाँति रति रमन बिबर्धन।
मन्द मधुर मृदु हास्य युक्त परिकर मन कर्षन ॥१२॥
सुनत सुरीले शब्द भईं मुर्छित सब वाला।
निकर नायिका नेह नमित भूतल छबि जाला ॥१३॥
अति आनन्द बिभोर देह की सुरति भुलाई।
सम्मोहन अरु बशीकरण मनु मन्त्र चलाई ॥१४॥
देखन हारे करत हृदय अपने अनुमाना।
क्या ऋतुपति युत पंच वाणधर लसत महाना ॥१५॥
यद्यपि प्रभु सौन्दर्य कोटि कन्दर्प दर्प हर।
रस विशेष रति रमन नायिका मन प्रमोद कर ॥१६॥


Scanned by CamScanner

तब इनकी लखि दशा राजनन्दन मुसुकाई ।
बनिता प्रिय सुठि सुखद बाहु से सबहिं उठाई ॥१७॥
सब को मुख कल कमल सदृश प्रेमाश्रु बिभूषित ।
स्वकर मार्जन करत लाल सब भाँति अदूषित ॥१८॥
देत अमित सुख स्वाद रसिक नागर गुन सागर ।
"सीताशरण" अधार सतत सब विधि उदार तर ॥१९॥
कृपा रूप कमनीय कामिनी काम प्रदायक।
आश्रित जन मन रमन सुखद सज्जन सब लायक ॥२०॥
जब प्रिय प्राण अधार मान सबको बहु दीना ।
रमि रमाय सब भाँति सबहिं अपने बस कीना ॥२१॥
तब सब नव नायिका नवल नागर अनुरागीं ।
भरि पिय के प्रिय भाव परम प्रेमामृत पागीं ॥२२॥
पढ़ि मनोज वर मन्त्र यन्त्र मृदु स्वरन बजाई ।
परम रसिक रमणीय रूप कीरति गुण गाई ॥२३॥
सुठि सुविचित्र स्वभाव सरल मृदु चित रसिकेश्वर ।
परम प्रेम रस रूप मधुर मोहन हृदयेश्वर ॥२४॥
प्रफुलित नवल बसन्त सुमन विकसित तरु शोभित ।
करत मधुर गुंजार सरस मधुकर मधु लोभित ॥२५॥
चन्द्र चाँदनी स्वच्छ लसत रजनी सुखदाई ।
गोप सुतनि रस स्वाद देत रसनिधि रघुराई ॥२६॥
तिन देखा पिय सकल नायकिन स्वबस बनायो ।
करि कमनीय कटाच्छ गान अनुगम बिधि गायो ॥२७॥



Scanned by CamScanner

परम प्रेम रस मत्त मधुर मोहन गुन संयुत।
सरस सुहावन सुखद श्रवण रुचि प्रद मनमोहित ॥२८॥
अमल अचल आनन्द उदधि मन्मथ लय कारी।
नृत्य गीत बहु हाव भाव के भेद अपारी ॥२६॥
करत कटाक्ष सनेह सहित चंचल चित चोरहिं।
धीर वीर गम्भीर जितेन्द्रिन को रस बोरहिं ॥३०॥
रसिकेश्वर रति रमन रसिक जीवन रस दानी।
सकल ईश शिरताज राजनन्दन सुखसानी ॥३१॥
सदा एक रस अमल कदाचित क्षोभ न होई।
मन इन्द्रिय अरु बुद्धि सदा निज बस करि जोई ॥३२॥
ऐसे अमित समर्थवान रघुवर मन रंजन।
सोऊ मुर्छित भये क्षुभित मन भव भय भंजन ॥३३॥
जाको वीर्य न पतन होय कबहूँ केहु काला।
प्रेम प्रभाव अपार लखहु वाको अस हाला ॥३४॥
जो स्वतन्त्र सर्वेश सकल जग सिरजन हारो।
जाकी महिमा नेति नेति कहि वेद उचारो ॥३५॥
वाको प्रेमी प्रवल प्रेम में निज बस कीनों।
प्रेम परत्व प्रकाश प्रदर्शन अपनो दीनों ॥३६॥
यहि विधि प्रेम प्रमोद छकीं सब गोप कुमारी।
गावहिं गीत सनेह पगीं सुनि श्री त्रिपुरारी ॥३७॥
शशि शेखर श्रीचन्द्र मौलि करि नृत्य सुखारी।
परमानन्द प्रमोद पगे हर्षित मन भारी ॥३८॥

एक तो कोमल कण्ठ गीत माधुरी अपारा ।
नाम रूप रस सने सखिन कीनो विस्तारा ॥३६॥
तापर श्री मैथिली रूप माधुरी नाम पुनि ।
पगे परम लावण्य सहित गुण सरस श्रवण सुनि ॥४०॥
याते जड़वत भये प्रेम बस शिव भगवाना ।
रघुवर लीला नाम रूप रस रसिक सुजाना ॥४१॥
सकल सुन्दरी नित्य राम रमणी रस रूपा ।
पुनि प्रभु की माधुरी रूप मधि मगन अनूपा ॥४२॥
नित्य धाम अभिराम रामलीला सुखदाई ।
सुमिरत सरस सनेह सहित हियमें हर्षाई ॥४३॥
याते नायक नवल रास रसिया रस सागर ।
रघुनन्दन रस रमन रसिक चूड़ामणि नागर ॥४४॥
श्री मैथिली मनोज मथन मद मर्दन मोहन ।
प्रीतम प्रीति प्रकाश करन कारक सन्दोहन ॥४५॥
तिन के लीला नाम रूप रस पगे गीत वर ।
सुनि शिव सुखद सुजान भये जड़वत सनेह भर ॥४६॥
श्री मैथिली सनेह सदन रघुवर रसिकेश्वर ।
युगल माधुरी हृदय सुमिरि सब सखि प्रमोद भर ॥४७॥
गावहिं गीत रसाल ललित अतिसय आकर्षण ।
मधुर मनोहर सुखद सुनत श्रवणन रस बर्षण ॥४८॥
श्रीसीता रघुनाथ नाम ऐश्वर्य महाँना ।
नाम महातम अमित भली विधि शिव ने जाना ॥४६॥



Scanned by CamScanner

विश्व दुखद अति प्रबल अनल सम गरल अपारा ।
काल कूट हर्षाय राम कहि कीन अहारा ॥५०॥
हृदय मध्य प्रभु बास समुझि कण्ठहिं में रोका ।
सुर नर मुनि गन्धर्व असुर सब किये बिशोका ॥५१॥
गरल कण्ठ अस नाम परेउ तेहि दिनते पावन ।
आश्रित आरति हरन सकल सज्जन मनभावन ॥५२॥
पहरे पर शिव रहे भई तिन की गति ऐसी ।
प्रीतम की क्या दशा भई सुनिये अब तैसी ॥५३॥
जब प्रभु मुर्छित भये देखि सब गोप कुमारीं ।
पगीं परम रस प्रेम प्राणधन गरभुज धारीं ॥५४॥
आलिंगन करि गाढ़ सकल सर्वांग सुखारी ।
प्रमुदित स्वकर उठाय चरण चूमत सुकुमारी ॥५५॥
बहुबिधि आशिर्वाद देंहि पिय को हर्षाई ।
चिरंजीव हों प्राणनाथ रस निधि रघुराई ॥५६॥
यहि विधि रास बिहार पगे नित संग हमारे ।
बिलसहिं "सीताशरण" सतत मम प्राण अधारे ॥५७॥
पुनि पिय प्रेम प्रमोद पगीं प्रिय प्रीति प्रकाशी ।
सब सहचरीं सनेह सनी सुख स्वाद बिलाशी ॥५८॥
सिंहासन पर पकरि प्राणवल्लभ पधराई ।
नवल नायिका बृन्द करहिं आरती सिहाई ॥५९॥
सर्वेश्वर सब जगत नाथ श्री चक्रवर्ति सुत ।
राजकिशोर रसज्ञ सरस शुभ गुण समूह युत ॥६०॥


Scanned by CamScanner

जीवन प्राणअधार आत्मा हम सब केरे ।
इमि वर बचन बिनोद सहित बोलहिं पग नेरे ॥६१॥
हे नरहरि भगवान दैत्य कुल नासन हारे ।
कीजै कृपा कृपालु गहौं पद मंजु तिहारे ॥६२॥
यह मम प्राण अधार रसिक रसियारस भीने ।
रक्षा इनकी करहु सतत हे परम प्रवीने ॥६३॥
यह मम जीवन नाथ अहैं सर्वस्व हमारे ।
याते कीजै कृपा सजग होवैं सुकुमारे ॥६४॥
जब यहि भाँति सनेह सनी सब गोप कुमारी ।
पिय रक्षा हित बिकल सकल मनभईं दुखारी ॥६५॥
लखि तिनको सुचि भाव प्रेम ग्राहक नायक वर ।
सावधान हो उठे गाढ़ सास्नेह हृदय भर ॥६६॥
कीन प्रशंसा भूरि भूरि तिन की रघुराई ।
लै बलिहारी सबनि केर मन मोद बढ़ाई ॥६७॥
तुम सबने यहि भाति ताल स्वर सहित सुखारी ।
नृत्य गान जो कियो दियो मोहिं कहँ सुख भारी ॥६८॥
अतएव हे मम प्रिया सकल ललना समुदाई ।
तेहि प्रकार पुनि नृत्य गान करिये हर्षाई ॥६९॥
वही ताल स्वर ग्राम नृत्य वर गीत मधुर तर ।
हाव भाव संयुत करहु प्रमुदित सनेह भर ॥७०॥
जो हमको सब बिघ्न बिनासक अति सुख दाई ।
कीजै सोइ आरम्भ सुरुचि मेरी अधिकाई ॥७१॥



Scanned by CamScanner

येही इष्ट हमार मनोरथ यही हमारो ।
दीजै प्रेम प्रकाश नेह नूतन सुख सारो ॥७२॥
परम चातुरी गोप सुतनि प्रिय प्रीतम बानी ।
सुनी सरस सुख खानि हृदय अन्तर हर्षानी ॥७३॥
बोलीं बचन बिनोद प्यार मय नम्र रसाला ।
सुनिये जीवन प्राणनाथ रसिकेश कृपाला ॥७४॥
हम सब बाला सतत नाथ पद पंकज दासी ।
निरखहिं नयन निमेष सदा आज्ञा की प्यासी ॥७५॥
प्रभु आज्ञा शिर धारि करौं स्वीकार हर्षि उर ।
हम सब के बड़भाग प्रेरणा दई रसिकवर ॥७६॥
अस कहि हिय अति मुदित भईं सब गोपकुमारी ।
बार बार पिय पाद पद्म सब ही शिर धारी ॥७७॥
पुनि सोइ नृत्य सुगान राग रागिनी उचारी ।
हाव भाव रस रमन सरस लीला बिस्तारी ॥७८॥
लखि सो रास बिलाश रसिक चूड़ामणि रघुवर ।
परम ललित शृंगार सार गन्धर्ब राजवर ॥७९॥
अखिल भोक्ता प्रवर कला विद्या गुण सागर ।
शिव पूजित रसिकेश सरस नायक नव नागर ॥८०॥
स्वयं उठे तेहि रास स्वाद सुख वर्धन काहीं ।
नृत्यन हित कामिनी काम पूरक हर्षाहीं ॥८१॥
सो पिय की माधुरी मधुर मनहर रस रंजन ।
कोटि काम कमनीय कला कौतुक मद गंजन ॥८२॥



Scanned by CamScanner

लखि सब सखी सनेह सनी पिय रूप अपारा।
"सीताशरण" निहाल निरखि सौन्दर्य उदारा ॥८३॥
करि मन बुधि चित सावधान बोले ऋषि राई।
सुनहु सूत सम्बाद सरस सज्जन सुखदाई ॥८४॥
रासोत्सव आनन्द प्रवर भोक्ता सर्वेश्वर।
सर्वदेव आराध्य परम स्वतन्त्र अखिलेश्वर ॥८५॥
रघुनन्दन रस मगन रमन रमनी रस दायक।
गोप कुमारिन स्ववश भये रस निधि सब लायक ॥८६॥
दिव्य लोक साकेत निकर परिकन निहारी।
बरसे प्रभु पर फूल मुदित जयकार उचारी ॥८७॥
जिन की सरस सुगन्ध पाय मधुकर समुदाई।
दिव्य धाम से गये रास मण्डल सुख पाई ॥८८॥
करत मधुर मकरन्द पान अति सय रसमाते।
उड़त मधुर गुंजार करत गिरि पुनि उठि जाते ॥८९॥
रूपामृत सुठि सिन्धु मधुर रघुवर रसिकेशा।
देव कुमारिन हृदय रमण इच्छा लखि वेशा ॥९०॥
यह सुचि रास बिलास स्वाद सुख हम किमि पावैं।
बाधक लज्जा प्रवल चित्त चंचल पछितावैं ॥९१॥
प्रभु को प्रेमी प्रथम लाज को तोरि बहावै।
तो अवश्य ही सारस मधुर रस चखि सुख पावै ॥९२॥
जे जन लाज अधीन रहत सो रास विलासा।
कदा नहीं अनुभवैं हृदय मानिय विश्वासा ॥९३॥


Scanned by CamScanner

ऐसे ही सब देव सुता लज्जा बड़ मानी।
रासस्थल नहिं जाय सकीं हिय में पछितानी ॥९४॥
यह रस रास अपार सुकृत फल निश्चय जानै।
जे हत भागी मनुज हेय तम यहि को मानै ॥९५॥
यदपि रूप रंजिता परम सब देवकुमारी।
लाज बिबस नहिं जाय रहीं जहँ रास बिहारी ॥९६॥
तदपि हृदय अभिलाष प्रवल तन सिथिल बनाई।
सकल कुमारिन चित्त चाव लालच अधिकाई ॥९७॥
तन पुलकित रोमांच खुली नीबी सब केरी।
रास विलास अपार स्वाद सुख चहत घनेरी ॥९८॥
ब्रह्मादिक सब देव तत्त्व खोजत जिन केरो।
पर नहिं कोइ लै सकेउ पार श्रम कियो घनेरो ॥९९॥
बिहरत बिपिन मझार मृगन के झुण्ड सुखारी।
एकटक निरखत रास रंग कौतुक मनहारी ॥१००॥

दो०–रघुवर रूप अनूप लखि, देव सुता सुकुमारि।
रास रमन रति रस चहैं, प्रमुदित हृदय मझारि ॥६॥

लीने जब धनु बाण हाथ में मृगया काहीं।
जात रसिक शिरमौर निरखि सब मृग हर्षाहीं ॥ १ ॥
रूपासक्त विभोर एक टक टरत न टारे।
कोटि काम लावण्य निरखि मन होत सुखारे ॥ २ ॥
मृगी झुण्ड अति प्रेम सहित लखि रूप उजागर।
चाहत हियमें रखन माधुरी मूरति साँवर ॥ ३ ॥


Scanned by CamScanner

एकटक दृग करि लखत प्यार से चाहत चाटन ।
त्रण चरना सब छोड़ि अश्रुयुत परम मुदितमन ॥ ४ ॥
प्रेम अश्रु दृग लसत निकट ठाड़ीं छवि पावैं ।
मानो सखी समाज प्रभुहि लखि हिय उमगावैं ॥ ५ ॥
धेनु निरखि छवि जाल परम प्रेमामृत पागीं ।
जल न पियैं नहिं घास खायँ चितवैं अनुरागीं ॥ ६ ॥
मिलन हेतु रघुराज कुँवर से हिय हर्षाहीं ।
ऊरध मुख करि प्रेम भरीं सब निज मनमाहीं ॥ ७ ॥
सुखसागर मनहरन नयन राजिव रस रूपा ।
निरखहिं पक्षि समूह तिनय युत रास अनूपा ॥ ८ ॥
सखिन गान रसखान तान मन बुधि चितलाई ।
सुनत सकल भरि प्यार हृदय में अति हर्षाई ॥ ९ ॥
यहि विधि चर अरु अचर लोक आनन्द समायो ।
श्री रघुनन्दन मधुर रास सबके मन भायो ॥१०॥
सरस रास रस सिन्धु सरिस सब विश्व डुबायो ।
परमानन्द प्रवाह सकल हियमें लहरायो ॥११॥
अपर कौन की कहें शम्भु श्रीपति असुरारी ।
जगदात्मा समस्त लोक पालक सुखकारी ॥१२॥
श्री चतुरानन अखिल श्रृष्टिकर्त्ता रस माते ।
पावत परमानन्द मगन मन अधिक सिहाते ॥१३॥
श्रृजि पालन संहार करत त्रयदेव महाना ।
तेउ डूबे रस रास सिन्धु में परम सुजाना ॥१४॥


Scanned by CamScanner

केहि लेखे में अपर जीव माया के चेरे।
भ्रमत अनेकन जोनि माँहि दुख लहत घनेरे ॥१५॥
ते यदि होयँ बिभोर देह की सुधि बिसराई।
तो नहिं कछु आश्चर्य मानिये मनमें भाई ॥१६॥
यह रस रास मझार परात्पर ब्रह्म रसिक वर।
सर्वेश्वर श्री चक्रवर्ति सुत हिय उमंग भर ॥१७॥
करत सरस रस रास परम प्रेमामृत पागे।
जग मोहन रघुवीर हर्षि सखियन अनुरागे ॥१८॥
कोटि काम कमनीय रूप अद्भुत अनूप वर।
परम प्रेम रस सार अखिल सौन्दर्य सुधा रस ॥१९॥
सो अति अमल उदार रूप लखि मुनि समुदाई।
अति रसज्ञ विज्ञान वान हिय लियो छिपाई ॥२०॥
किये गोप्य यह रास महाँ सुख स्वाद बढ़ावै।
जहँ तहँ किये प्रकाश यथारथ सुख नहिं पावै ॥२१॥
श्री नृप राजकुमार रूप लखि रूप उजागरि।
मोहित हो अति काम बिबस सब विधि गुन आगरि ॥२२॥
उमा रमा श्री सरस्वती ब्रह्माणी ये सब।
पृथ्वी तल पर आय कियो मालिनि विग्रह तब ॥२३॥
सरस सुगन्धित सुमन बिरचि अति सुन्दर माला।
नृपकुमार सुकुमार निकट आईं छबि जाला ॥२४॥
बिचरैं उपबन माँहि रास रस की अभिलाषा।
गईं मुदित मन पास लह्यो सुख स्वाद हुलासा ॥२५।



Scanned by CamScanner

वन देवियाँ सनेह सहित तुलसी प्रसून वर ।
मिश्रित माला विरचि दिव्य आईं प्रमोद भर ।।२६।।
रास रसिक शिरमौर प्राप्ति हित अति सुखपाई ।
आदर युत हर्षाय शुभ्र माला पहिराई ।।२७।।
तेहि क्षण सोचेउ सोम नाम राकापति मेरो ।
अखिल बनस्पति नृपति सुयश जग माहिं घनेरो ।।२८।।
यहि वर बिपिन प्रदेश मध्य रसिकेश राम घन ।
करत सरस रस रास सबहिं सुख प्रद सनेह घन ।।२९।।
मैं न करौं सत्कार व्यर्थ जग जन्म हमारो ।
अस मन में अनुमानि परम कौतुक बिस्तारो ।।३०।।
वृक्ष लता जे बिपिन माहिं सबको समुझयो ।
दिव्य सुगन्ध समेत सुमन बहुबिधि प्रगटायो ।।३१।।
सरस अमल मकरन्द पूर्ण सुचि सुधा सार जिमि ।
रघुनन्दन को दियो रीति कवि वरणि सकै किमि ।।३२।।
तेहि रस रास विलाश मध्य सुख स्वाद परस्पर ।
एक एक को देत लेत आनन्द हर्षि उर ।।३३।।
जो जो रस हित क्रिया करैं नायिका मुदित मन ।
तेहि के संग तेहि भाँति करत रघुवर सनेह घन ।।३४।।
ललना ललित अनेक एक रघुवंश हंस वर ।
रमत अमित तन धारि सबनि सँग हिय उमंग भर ।३५।।
प्रीतम प्रीति प्रकाश करन हित क्रिया रसाला ।
रति रस वर्धन हेत करत बहुबिधि सब बाला ।।३६।


Scanned by CamScanner

तैसेहि प्रीतम प्रीति पगे सखियन के संगा।
करत क्रिया कमनीय कला कौतुक रस रंगा ॥३७॥
एक एक के बाद करत नृत्यादि गान वर।
बरसावत रस रंग प्रीति वर्धन प्रमोद कर ॥३८॥
यहि विधि रास विलास होत बीतउ बहुकाला।
ब्रह्मा को एक कल्प तलक भो रास रसाला ॥३९॥
एतेहु पर नहिं होत काहु को चित्त उदासा।
यहिं विधि होवे रास सतत सबकी अभिलाषा ॥४०॥
रास बन्द अब होय बुद्धि यह दूर भगाई।
रघुनन्दन पर प्रीति रीति सबकी अधिकाई ॥४१॥
इस प्रकार यह अद्भुद रसमय रास विहारा।
परम अलौकिक राजकुँवर लीला विस्तारा ॥४२॥
सेवन करत सनेह सहित सब गोप कुमारी।
करहिं कटाच्छ कलोल सरस चितवनि मनहारी ॥४३॥
परम माधुरी मोद भरीं आस्वादन करहीं।
मन नहिं मानत तृप्ति उमग हियमें अति भरहीं ॥४४॥
यहि सुख सम त्रयलोक सकल सुख अपर न कोई।
कारण यही महान तृप्ति सखियन नहिं होई ॥४५॥
रास विलास अपार प्रेम पूरित रस सागर।
रमत जहाँ रसिकेश राजनन्दन नव नागर ॥४६॥
सबके मन अभिलाष प्रबल पर निशा सिरानी।
"सीताशरण" सिहायँ सखी सुख स्वाद समानी ॥४७॥



Scanned by CamScanner

रमि रमाय पिय संग सखिन अति आनँद पायो ।
"सीताशरण" पवित्र प्रेम प्रीतमहिं चखायो ॥४८॥
अब श्री करुणा खानि सुत सज्जन सुखदाई ।
निज मनकी अभिलाष कहत सब मुनिन सुनाई ॥४६॥
सकल कला गुण पूर्ण शास्त्र संगीत विशारद ।
अमित कोटि गन्धर्व राज आदिक मुनि नारद ॥५०॥
नृत्य गान वर वाद्य कला कौशल समुदाई ।
इन सबकी सुचि सार कियो धारण रघुराई ॥५१॥
मनन शील मुनि बृन्द सकल मनमोहन हारे ।
चक्रवर्ति प्रिय प्राण सदृश मृदुचित सुकुमारे ॥५२॥
करहिं कृपा की कोर सतत हिय पटल हमारे ।
मन हर रास रसाल सहित बिहरें छवि धारे ॥५३॥
हम सब रास सुस्वाद सतत निज हिय बिच ध्यावैं ।
"सीताशरण" सनेह सहित प्रीतमहि रिझावैं ॥५४॥
दै सबको रस रास स्वाद राजीव बिलोचन ।
मन्द मन्द मुसुकाय हरसि बोले भवमोचन ॥५५॥
गोपसुता सब सुनहु उदित रवि निशा सिरानी ।
अब निज निज गृह जाहु बचन मम मानि सयानी ॥५६॥
हो सब परम प्रवीन प्रीति रस वर्धन हारी ।
प्राणहुँ से सब भाँति मोहि तुम परम पियारी ॥५७॥
तुम उद्धव हो वैश्य वंश हम राजकुमारा ।
दिन में रहना यहाँ उचित नहिं होय तुम्हारा ॥५८॥



Scanned by CamScanner

यहि बिधि पिय के वचन सुनत सब गोप कुमारीं ।
अति सनेह रस सनी सरस प्रिय गिरा उचारीं ॥५९॥
हे प्रीतम चितचोर परम मन हर छबिधारी ।
तजि प्रभु के पद कंज अनत गति नहीं हमारी ॥६०॥
परसि प्राणधन पाद पद्म गति मोर नसानी ।
याते तजि पद पद्म जाऊँ कहँ सारँग पानी ॥६१॥
जय जय परम उदार अनघ हे रास बिहारी ।
प्रीतम प्रीति प्रकाश करन परिकर मनहारी ॥६२॥
प्रथम अमित सत्कार आपने हमरो कीनो ।
पावन परम रसाल प्रेम रस हमको दीनो ॥६३॥
तिरस्कार अब करत नाथ सो कारण काहा ।
हे अति अमल रसेश कहहु हमसे नर नाहा ॥६४॥
जग निन्दित अति काम तदपि मम कीन सहाई ।
हृदय रमण रसिकेश आपसे दीन मिलाई ॥६५॥
जगमें निन्दा पात्र काम पर मम हितकारी ।
प्रभु पद पंकज माँहि लगाई सुरुचि हमारी ॥६६॥
अमित कोटि सह धन्यवाद वाको हम देहीं ।
मोहिं पिय चरणन माहिं मिलायो लाकर तेहीं ॥६७॥
हैं हम सब अति भाग्यवान प्रभु पद रज पाई ।
करुणानिधि हृदयेश कृपा कीनी अधिकाई ॥६८॥
अहो सुहृद एक आप मित्र प्रिय अपर न कोई ।
जायँ कहाँ हे नाथ कृपा करि कहिये सोई ॥६९॥


Scanned by CamScanner

काम त्वदीय महान प्रेम रसदायक अद्भुत ।
प्राणनाथ पद कंज मंजु रति शुभ गुण संयुत ॥७०॥
उपकारक अति अमल मनोमय नव छबिधारी ।
बार बार हम सकल जाऊँ बाकी वलिहारी ॥७१॥
करै कोटि किन यत्न नाथ पद पद्म प्रेम रस ।
जो दुर्लभ सब भाँति होय सो सुलभ नाथ कस ॥७२॥
पर प्रभु पावन काम मोहिं तव पद रति दीनी ।
देखि नाथ पद कंज भई मम मति रस लीनी ।७३॥
याते हे हिय हार हरषि हमको अब छबिधर ।
नाथ न त्यागो कदा विनय मानिये रसिकवर ॥७४॥
गोप सुतनि की सुनी प्रेममय विनय सुहावनि ।
अति अधीर दीनता पूर्ण कातर पिय भावनि ॥७५॥
परब्रह्म परमेश अमल आनन्द द्वन्द हर ।
राम सच्चिदानन्द कन्द अनुपम सनेह घर ॥७६॥
सेवक सुखद स्वतन्त्र प्रेम परतन्त्र स्वजनहित ।
परम उदार कृपालु शील निधि अतिसय मृदुचित ॥७७॥
मनमें करत बिचार इनहिं कैसे समझाऊँ ।
श्रुति मर्यादा बिमल कवन बिधि पालन पाऊँ ॥७८॥
उनकी हिय रुचि जानि बिहँसि बोले रघुराई ।
सुनहु कामिनी सकल मोहिं अतिसय सुखदाई ॥७९॥
तुम सब परम प्रवीन रमन रति सरस सयानी ।
मेरी अति प्रिय सदा अहो तुम सब सुख खानी ॥८०॥


Scanned by CamScanner

तुम्हरो बिषम वियोग मोहिं अति दुसह दवारी ।
तदपि जासु निज भवन मुदित मन सब सुकुमारी ॥८१॥
पुनि बृन्दावन माहिं सुखद यह सरस सुहावन ।
रास रंग रमनीय लहोगी अति मन भावन ॥८२॥
तुम सब हो मन रमन मोहिं अतिसय सुखदाई ।
नित्य धाम सुख स्वाद लहोगी हिय हर्षाई ॥८३॥
यहि बिधि सुनि पिय बानि प्रेम रस सनी सुखदवर ।
प्रिय आयसु शिर राखि कीन पद वन्दन मुदभर ॥८४॥
मूरति मधुर रसाल सकल निज हिय पधराई ।
गोप कुमारी गईं सकल गृह अति सुख छाई ॥८५॥
पर निज मन अरु नेत्र बसाये प्रभु पद माहीं ।
निबसहिं अपने सदन हृदय में अति पछिताहीं ॥८६॥
यद्यपि प्रभु ने इनहिं बिविधि विधि से समझायो ।
दैइहों पुनि रस रास प्रवल लालच दिखलायो ॥८७॥
तदपि विरह की पीर हृदय में अधिक सतावै ।
प्रभु मूरति दृग बसे तबहुँ सन्तोष न आवै ॥८८॥
गोप कुमारी गईं जबहिं निज सदन सिधाई ।
तब रघुराज किशोर सखा सेबकन जगाई ॥८९॥
भरत लषण रिपुदलन योग माया बस सोवत ।
प्रभु दिनेश लहि जगे वन्दि पग प्रभु मुख जोहत ॥९०॥
सेवक सखा सुबन्धु सहित गज चढ़ि रघुनन्दन ।
अवधपुरी प्रस्थान किये निज जन मन रंजन ॥९१॥

आये महल मझार मातु मन मोद बढ़ायो।
करि आरति मन मुदित हर्ष सब मातन पायो ॥९२॥
भोजन मधुर रसाल स्वाद सुख सुधा सरिस अति।
जननी हर्षि पवाय प्यार कीनो निर्मल मति ॥९३॥
पुनि कह सोवहु तात कहहु अब तक सब भाई।
कहाँ रहे भरि निशा लाल मोहिं देहु बताई ॥९४॥
सुनत बचन अति मधुर प्रेम पूरित रस साने।
बोले श्री रघुबीर धीर सब भाँति सयाने ॥९५॥
मैइया हम सब बन्धु पिता की आयसु पाई।
मृगया हित बन गये जहाँ जमुना सुखदाई ॥९६॥
करि शिकार सब बन्धु सहित जमुना तट माहीं।
किये मुदित विश्राम कष्ट पायेउ कछु नाहीं ॥९७॥
यद्यपि आई बिपिनि मध्य आँधी अधिकाई।
तदपि रावरी कृपा सकल विधि भई भलाई ॥९८॥
यहि बिधि रस वात्सल्य मगन माता हर्षाई।
मातु दुलारहिं पाय मुदित सोये रघुराई ॥९९॥
कहत सूत मुनिराज सुनहु शौनक विज्ञानी।
श्रोता सकल समाज रासलीला सुखखानी ॥१००॥

दो०–हे माँ बन में हमनि पर, आई बिपति अपार।
तदपि रावरी ही कृपा, रक्षा भई हमार ॥७॥

वात्सल्य सौशील्य अमित गुण सिन्धु रसिकवर।
चक्रवर्ति नृप सुवन भुवन भूषन सनेह घर ॥ १ ॥

लीला ललित रसाल मधुर सुचि सुधा लजावन ।
परम प्रेम रस रूप सतत सज्जन मनभावन ॥ २ ॥
जो यह लीला सुनै सदा हिय सरस बनाई ।
देवै दिव्य प्रकाश प्रीति दुख द्वन्द मिटाई ॥ ३ ॥
मन बुधि चित करि शुद्ध भावनाभरै अनपम ।
पावै परमानन्द होय अतिसय सुख रूपम ॥ ४ ॥
जे रघुवर रस रसिक तिनहिं प्रभु पद रसखानी ।
देवे अचल अदाग अमल सब बिधि सुखदानी ॥ ५ ॥
जय जय राजकुमार मार सत कोटि सुमद हर ।
जय जय परम उदार रसिक चूड़ामणि छबिधर ॥ ६ ॥
जयति नायिका नेह नवल नायक नवीन वय ।
जयति प्रेम परतन्त्र प्रेम ग्राहक सुशील मय ॥ ७ ॥
जयति प्रणत प्रति पाल करन हारे मन हर जय ।
जय जय नृपति किशोर मोर चित चोर सुघरजय ॥ ८ ॥
जयति कामिनी काम कला पूरक सुजान जय ।
जयति नायिका रमन रास रस खानि सजन जय ॥ ९ ॥
जय जय स्वजन सनेह सुधा साने पिय जय जय ।
जय जय परम प्रवीन प्रीति परखन जिय जय जय ॥१०॥
जयति सरस रति रमन केलि तत्पर रस बस जय ।
जय जय 'सीताशरण' अमल सुख सदन बदन जय ॥११॥

दो०–जय जय जय रसिकेशवर, रसिकन प्राण अधार ।
जय गुनशील स्वरूप निधि, मम सर्वस सुखसार ॥१॥

इति श्रीयुगल रहस्य माधुरी विलासे सीताशरण सुमति प्रकाशे गोपकन्या रामप्रकरण वर्णानाम द्वितीयोऽध्याय: पूर्णमस्तु ।